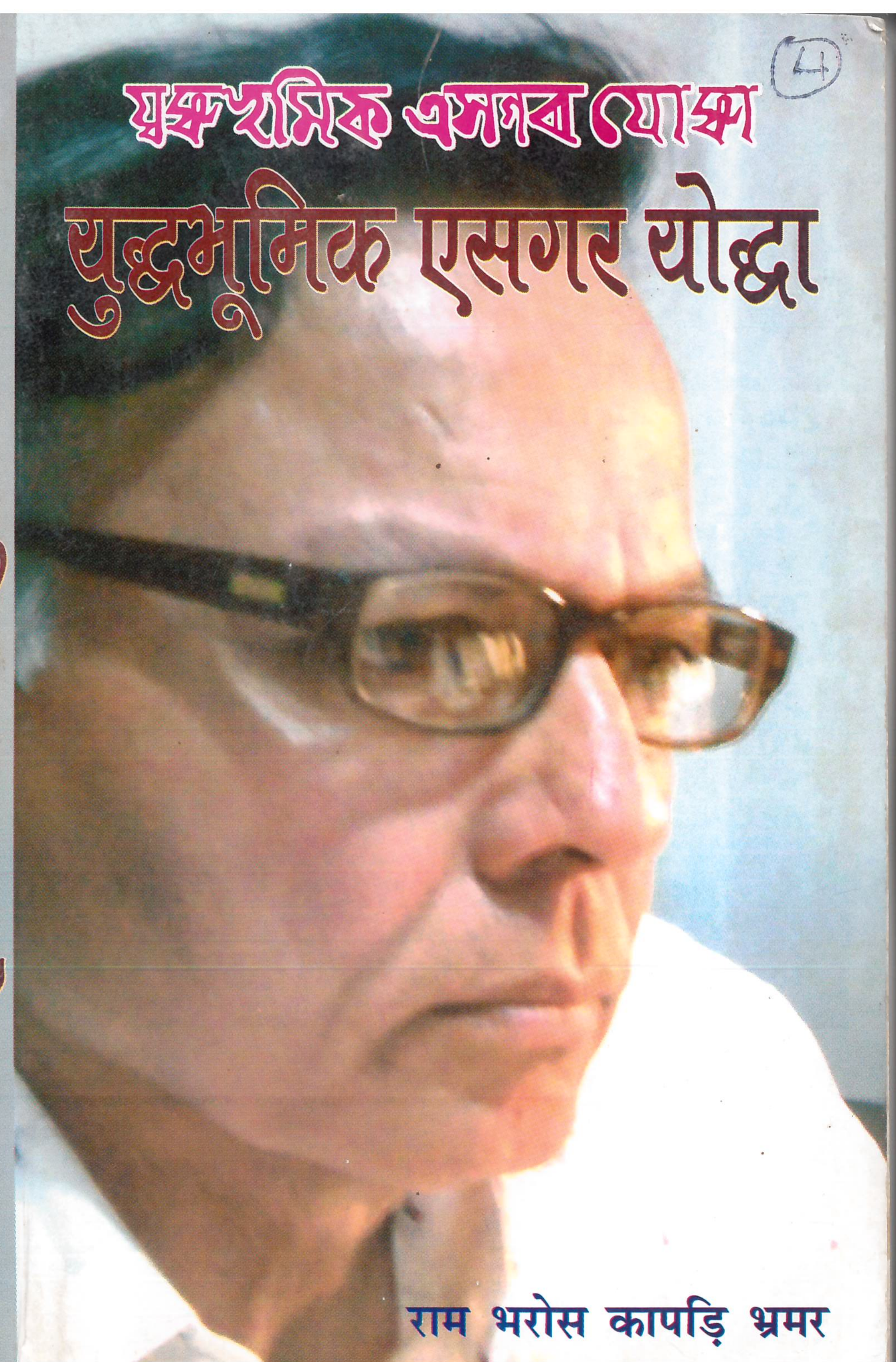

যুদ্ধভূমিক এসগর যোদ্ধা
युद्धभूमिक एसगर योद्धा
राम भरोस कापड़ि भ्रमर

युद्धभूमिक एसगर योद्धा

(कविता-संग्रह)



युद्धभूमिक एसगर योद्धा

(कविता-संग्रह)

राम भरोस कापड़ि भ्रमर



प्रकाशक

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान

जनकपुरधाम (नेपाल)

प्रथम संस्करण : 2017

© : राम भरोस कापड़ि भ्रमर

पत्राचार- मनमीत कुटीर, राजपूत कॉलोनी

मौलागंज, दरभंगा- 846004

मो.- 09430640883

शव्द-संयोजन : मे.पाण्डेय कम्प्यूटर्स

मुद्रक : किशोर प्रिंटिंग प्रेस

पटना- 4

ISBN : 9789937-0-1693-3

YUDHABHUMIK ESAGAR YODHA

by: *Ram Bharos Kapari Bhramar*

पुस्तकालय संस्करण

मूल्य : ₹500.00

(छः पाँच सय मात्र)

सामान्य संस्करण

मूल्य : ₹150.00 भारु

(एक सय पचास मात्र)

मूल्य : ₹225.00 ने.

(दू सय पचीस टका मात्र)

नूतन ई गुंजन

श्रीराम भरोस कापड़ि भ्रमर नेपालमे मैथिलीक पर्याय भऽ गेल छथि। की सरकारी प्रतिष्ठानक उच्चतम सोपान की सहरजमीनक असरकारी साहित्यिक जुटान सभ ठाम भ्रमरजीक वर्चस्विता दृश्यमान होइछ। साहित्यिक प्रायः कोनो विधा नहि बाँचल होयत जाहिमे हिनक लेखनी नाचल नहि हो! संस्था-संस्थानक एहन कोनो शाखा नहि होयत जाहिमे हिनक दीप्तिमान आभा नहि हो! पुरस्कार सम्मानक कोनो अंश छूटल नहिं होयत जे हिनक नामक संग जूटल नहि हो! मैथिलीसँ सम्बद्ध एहि दू-तीन दशकमे एहन कोनो अनुष्ठानक कल्पना नहि कऽ सकैत छी जाहिमे ई अल्पना नहि पाड़ने होथि! नेपालक युवा तूर-मयूर लेल ई पावसक फुहार छथि तँ बड़-बड़ कलम-शूर लेल लक्ष्यक पहाड़ छथि।

ई आब वयसक ताहि मोड़ पर पहुँचि गेल छथि जतऽ बहुतो कवि-लेखक ओर धऽ लैत छथि अथवा टुकदुम-टुकदुम चलैत छथि, मुदा ई तँ दिनानुदिन फर्दबाल भेल जाइत छथि। हिनक ऊर्जासँ मैथिली लगातार शक्ति अर्जित कऽ रहलीह अछि। जनकनन्दिनी मानू एखनहुँ 'युद्धभूमिक एसगर योद्धा' बनल 'भ्रमर'क पक्षमे रावणक वंशजकेँ ललकारि रहलीह अछि!

ई अपन साहित्यिक उद्यानमे पहिल थल्ला कवितेक लगौने छथि भरिसक। तेँ सभसँ पुरान गाछो कवितेक छनि। ओहिमे झबरल फूलक सुगन्धि लोक ततेक दिनसँ लऽ रहल अछि । क्यो एहन नहि होयताह जे ओहि गाछ तर छनो भरि रूकल नहि होयताह आ दू चारिटा फूल लोढ़वा लेल झुकल नहि होयताह- ओकर सुवाससँ बेर-कुबेर मन मस्त करबाक हेतु। हिनक कविता-गीत-गजल मस्त तँ करिते अछि मनकेँ, ताहि संग समाजक अस्त-व्यस्त परिस्थितिकेँ सोझाँ राखि पस्तो करैत अछि तँ ताहिसँ उबरबाक रस्तो देखबैत अछि।

हिनक काव्य-सम्पदा पहिनहिसँ ततबा समृद्ध छनि जे ताहिमे आब, हमरा जनैत, मात्रात्मके वृद्धि सम्भव अछि। कवि-अनुभूति तँ सघन पूर्वे सँ छनिहेँ, सहज सम्प्रेषण-गुणो नैसर्गिके छनि आ पाठकक चित्तक चंचलताकेँ स्थिर अपन पाँती पर तँ करिते आबि रहल छथि- एहि सभमे बढ़ोत्तरीक आब अवकाश कतऽ? आब तँ बस पसार कने फैल भऽ गेलनि अछि- जेना-जेना नव-नव घटना सभ घटित होइत गेलैक अछि, हिनक प्रतिक्रिया अबैत गेलनि अछि, हिनक चिन्ता उभरैत गेलनि अछि, चिन्तन कविता बनि उतरैत गेलनि अछि। जागतिकसँ स्थानिक धरि- व्यक्तिकेँ प्रभावित करऽवला जतऽ जे कोनो उथल-पुथल भेल, तकर मर्मकेँ पकड़ि, ताहि पर टिप्पणी करब धर्म मानि ई अपन कवि-कर्मकेँ एखनहुँ सार्थक करैत छथि। तकरे परिणाम ई संग्रह थिक।

नेपालमे भूकम्पक त्रासदी-मजबूरी हो कि अन्तरराष्ट्रीय वृद्धवर्षक खानापूरी, नेपाली राजनीतिक इन्द्रधनुषी छटा हो कि मधेशक अस्तित्व लेल संघर्षक घन-घटा, मानवकेँ रोबोट बनि जयबाक व्यथा हो कि प्रकृतिकेँ मानवीकृत कऽ देबाक कथा, 'अन्धकारक विरुद्ध' सूर्योदयक प्रतीक्षा' हो कि 'युद्धभूमिक एसगर योद्धा'क शौर्यक समीक्षा- भ्रमरजीक दृष्टि सभ दिस समतूल छनि, व्यष्टि आ समवष्टि-दुनू पर अनुकूल छनि। 'विकास-प्रेमी मैथिल'क स्वार्थ पर व्यंग्य करैत छथि तँ मधेशी आन्दोलनक समर्थनमे जयोद्घोष करैत जोश भरैत छथि-

'जान ने जायत आब निरर्थक'।

एक ठाम कहैत छथि-

आब नहि सहत मधेशी
आब नहि रहत उपेक्षित मधेश
मधेशेक धरतीमे जनमल रहैक
सीता आ बुद्ध
दीनाभदरी आ सलहेस।
हक आ अधिकारक हेतु शहीदक बलिदान
पाओत गऽ अबस्से
पहिचानक उदेस..........

(आह मधेश, ओह मधेश)

दोसर ठाम एहि विचारक आर विस्तार दैत छथि-

ई तँ महज अस्तित्वक लड़ाइ छै
दशकोशसँ भाषा-भूमिकेँ
अतिक्रमण कऽ
रोब जमबैत सामन्त सभक
चक्रव्यूहमे पड़ल विचार आ विवेचनाक
सैन्य शक्ति,
सभ निरीह भावेँ
अपने घर, जर आ जमीनसँ
बेदखल होयबाक दर्दकेँ सहैत आएल अछि
मोने-मोन अपनाकेँ असहाय, बन्दी
आ कमजोर मानैत
विद्रोहक ज्वालामे जरैत आयल अछि
तेहने ज्वलाक आवाज बनि ठाढ़ हम
अनचोकेमे सही
एहि अश्वमेघक घोड़ाकेँ पकड़ि लेने रही
आ तखन लागल छल-हम ठीके
एकटा नमहर लड़ाइक शुभारम्भ कऽ देने रहिऐक
से........
आइयो ई चलि रहल अछि
चलैत रहत......................

(युद्धभूमिक एसगर योद्धा)

एहि महायज्ञमे 'होम' भऽ गेल महान् योद्धाक पावन स्मृतिमे नत होइत श्रद्धार्पित करैत छथि-

देश मंगैत अछि न्याय
पहिचान आ स्वाभिमान!
तकरालेल चाही
गाण्डिबधारी परमात्माक
फेर एक बेर पुनर्जन्म
जकर स्वरुप जनताक रक्षक

आ सेवकक होइक मात्र!

(हुनकहि लेल)

ऋतु-प्रकृति (बरिसैत मेघ), पाबनि-तिहार (दीयाबाती), नववर्षक अभिनन्दन- सर्वत्र आशावादी दृष्टिकोणक आगर बनल छथि कवि। हुनक हृदयमे मैथिल होयबाक गौरव, 'मैथिलत्वक बोध'क सागर कलकल करैत छनि। फलतः 'मुम्बइमे मिथिलाक खोज' रहैत छनि तँ कोनो गीतमे ई टुकड़ी उचरि अबैत छनि-

जय मैथिल जय मैथिली उद्घोष गगनकेँ बचाओत

सत्यस्वरूपा माँ मैथिली अन्हार हृदयसँ भगाओत

वस्तुतः अन्हारेक अन्हरजालीमे औनायल-ओझरायल लोक अपन-आनक राग अलापैत, परस्पर सम्मानक ताग तोड़ैत रहैत अछि, किन्तु जकरामे विवेक छैक, बन्धुत्वक टेक छैक, ओ एतऽ रहओ कि ओतऽ रहओ- ओकर गराँक ढ़ोल एक छैक, मुँहक नाराक बोल एक छैक, व्यंजनोंमे अभिधाक सेक छैक। देखल जाय-

भ्रष्टाचार-शिष्टाचार
कमीशन-विकासक आधार
मुट्ठी भरि धनिकक लेल,
गरीबी बनल विकराल
जय देश, जय जनता
जय भारत, जय नेपाल।

(प्रजातंत्र आ हम सभ!)

अपन एहि बन्धुवरक साह्लाद स्वागत! नूतन एहि 'गुंजन' लेल हार्दिक अभनन्दन!

डॉ. भीमनाथ झा
दरभंगा

यात्री-स्मृतिदिवस
५ नवम्बर, २०१६

कविता तऽ हमर संगी छल यौ!

हँ, एम्हर किछु समयसँ अनेरे हमरासँ कन्नी काट' लागल अछि। मैथिलक संस्कार एकरहु पर जोरकर' लागल छै प्रायः। नहि तऽ २०२५/१/८ अर्थात् २० अप्रैल, १९६८ई.कऽ लिखल साबूत कविता हमर पहिल कविता संकलनमे १९७३ईमे प्रकाशित भेलाक बादक ई. ४४-४५ वर्षक अभ्यन्तर पता नहि कतेक बेर हमर साथ पुरलक, नीन्न सँ जगौलक! आ चारू भर चमकैत भाला, गरांस, तरुआरि आ रक्त पिपासु सभक हेँजमे स्वयंके ठाढ़ हएबाक हिम्मत बन्हौलक। से एखन पता नहि, मतलबी मीत जकां किए हमरासँ रुसि रहल अछि, अथवा ईहो भऽ सकैछ-हमही कनेक बेसी अवडेर' लागल छिऐ ओकरा आ ओ स्वाभिमानी किए हमरा संग पुरत-बजाउ नेतँ बजाउ, नहि तऽ अहाँ ओहि पार हम एहि पार! - से लगैए हमरा धरि! पता नहि कवितोकेँ इएह 'फिलिंग' हएत कि नहि। जँ सएह रहितैक तऽ सिंहदरबारक मुँहथरि पर ठाढ़ भऽ किए हमरा हाक पारितए अपन अनुभूतिमे 'शेयर' करबा लेल। तखन ई कहि सकैछी जे ई आब ओकर मोनक बात भऽ गेलै। जखन लगतै हमरा बजाओत, नहि मन हयते आँखि मुनने रहत। मुनओ! जएह जतेक हमरा संग पुरलक ई की कम छै।

नेपालक मैथिली साहित्यिक इतिहास (१९७२ई.) जखन 'मौन'जी पहिल बेर लिखलनि तऽ नेपालक तीन कविक विशेष श्रेय देलनि 'भ्रमर', अयोध्यानाथ आ 'पाथेय'। हमर पहिल कविता संग्रह 'बन्न कोठरी औनाइत धुँआ (१९७३ई.) जखन प्रकाशित भेल तऽ सम्मतिमे आदरणीय प्रो. सोमदेव लिखलनि-'एखन नेपालक जे दू-तीन युवक कवि हमरा मजबूर कऽ देलनि अछि मानए लेल जे हुनका लोकनिमे किछु कहबाक छनि आ नवढ़ंगसँ कहबाक छन्हि, ताहि कवित्रयी, 'भ्रमर', अयोध्यानाथ, 'पाथेय', बीच 'भ्रमर' सभसँ अधीक कर्मठ छथि- लेखन आर संगठन, दुनू क्षेत्रमे। ताहि कविता संकलनमे डॉ. धीरेन्द्र अपन 'टिपाउत' लिखैत काल लिखैत छथि- ''नेपालक

धरतीपर रहनिहार नव मैथिली कवि लोकनिमे दूगो नामकेँ समस्त मैथिली संसार महत्त्वपूर्ण मानि लेलक अछि-'पाथेय' आ 'भ्रमर' कें।''

आइ सँ ४४ वर्ष पूर्व नेपालीय मैथिलीकेँ साकांक्ष भऽ अवलोकन कएनिहार गुरुवर लोकनिक ई विश्वास पता नहि हम एखन धरि कायम राखि सकलियनि अथवा नहि, मुदा ''बन्न कोठरी': औनाइत धुँआ'सँ एखन 'युद्धभूमिक एसगर योद्धा'. धरिक यात्रामे अनेको एहन पड़ाव अबैत गेलै जाहिमे हमर प्राथमिकता बदलैत गेल आ कविताक संग सेहो कम होइत गेल। जँ कि कथा, उपन्यास, निबंध, यात्रा संस्मरण, साक्षात्कार, लोकसाहित्य, पत्रकारिता हमर रुचिक विविधिकरणक साक्ष्य बनैत गेल, कविता सरिपहुँ हमरा सँ रुष्ट होब' लागल। आ तखन कोनो एकांत क्षणमे हमरा लागल जे ठीके तऽ ने ओ रूसि गेल अछि। वाजिब छै ओकर मुँह फुलायब!

एहि बीच गीत- गजल सेहो प्रशस्त आएल। तखन इहो बुझायल जे 'मोमक पघलैत अधर' (गजल संग्रह, १९८२ई.) ओ अन्हरियाकचान (गजल संग्रह २०१४) क प्रकाशनसँ थोड़बो राहत तऽ अवश्ये कविताकेँ भेल हएतै। चलु हम नहि तऽ हमर सखी, बहिनपाक संग तऽ छथि, तैयो साँच बात तऽ इएह थिक, मोन हमरो कहाँ मानैत अछि। 'बन्न कोठरीः औनाईत धुआँ' (1972ई.) नहि आब नहि (१९७९ई) अपन अनचिन्हार (१९९०ई.) के बाद मोनके आ साँच कही तऽ कविताकेँ तोष भरोस दिअएबाक हेतु ई 'युद्धभूमिक एसगर योद्धा'क संग आब' पड़ल अछि। एकदम सहज रूपेँ, कोनो नियार-भास कऽ कऽ नहि। ने पूर्वेमे एहन आदत रहल ने आबो अछि। लागल-खासे नम्हर खालीपन भेलैक तऽ जे जतेक, जेना-तेना कविता सभ भेटल एहिमे सजा देलिऐ। भए सकैए-हमर पुरना पुस्तक, पत्रिका अथवा पाण्डुलिपी, कॉपी-डायरीक दोगमे कतेको कविता छूटि गेल हो, तकरा पुनः तकबाक हमरा आंट नहि रहल, जे भेटल -सएह सत्त प्रस्तुत कएल।

भलेँ हमर कविता संग्रह १९७३ई.मे प्रकाशित भेल हो, हमरा पहिल कविता अन्हरिया-इजोरिया 'आखर' १९६८ई.क अंकमे छपल छल जकरा हम खण्ड तीन अन्तर्गत रखने छी। वास्तवमे कविता-संग्रह तीन खण्डमे प्रस्तुत कएने छी। से किएक? जँ पढ़बै-गुनबै तऽ अबस्से बूझि जएबै। हम अपने मुँहें की कहु। तखन एहन समयमे गुरुवर डॉ. धीरेन्द्रक ई कथन तऽ स्मरण अबिते अछि- ''कवि रामभरोस तथ्यतः मैथिलीक ओई फॉटक कवि थिकाह जे कोनो बादक बैज टांगि चलब आवश्यक नहि बुझैछ, अपितु जीवनक सूक्ष्मसँ सूक्ष्म अनुभूतिकेँ स्पष्ट आ सहज ढ़ंग सँ राखि दैछ। ''ऐज यू लाइक इट''- अहाँ जे बुझी-कहब ओकर नियति थिकै, अनिवार्यता थिकै, आवश्यकता थिकै आ धर्म थिकै! ('बन्न कोठरीः औनाईत धुआँ', कविता संग्रह, १९७३ई.क भूमिकामे)''

सांच बात तऽ इहो रहल जे हम जे लिखलहुँ तकरा पर प्रत्यक्ष प्रभाव डॉ. धीरेन्द्रक 'सहजतावाद'क रहैक। प्रो. सोमदेव तहिआ सहजतावादक प्रखर कवि मानल जाइत छलाह। डॉ. धीरेन्द्रक भूमिकाक कारणे (काल ध्वनि)। संगति एतेक धनगर आ प्रभावपूर्ण रहए जे दुनूक रचनाक प्रभाव हमरा रचनापर पड़ब अस्वाभाविक नहि, मुदा से कोनो खास 'बाद'क दृष्टिकोण लऽ कऽ नहि। जे देखी तकरा तहिना लिखि दी। बस! सम्भवतः तकरे 'सहजतावाद' कहलखिन्ह डॉ. धीरेन्द्र!

इहो जे किछु संभव भऽ सकल हुनके प्रतापेँ। गामसँ जनकपुर आएल रही उच्च शिक्षाक क्रममे पढ़'। बगलमे डॉ. धीरेन्द्रक रहथि। सम्पर्क बनल आ किछु लिख' लगलहुँ। हमरा गाममे-घरमे साहित्यसँ तेहन लगाव ककरो छलैक से हमरा नहि बुझाइत अछि। तखन हमर एहि दिस प्रवेश आ ताहुमे मैथिलीमे, जाहि भाषाक बारेमे स्वयं हमरो ने किछु बुझल रहए। तखन ई 'मिराकल' कोना भेलै, डॉ. धीरेन्द्रक शब्दमे- ''सं......... २००७ सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी सालमे धनवित्त जे हो मुदा विद्याक क्षेत्रमे अप्रसिद्धेटा नहि चिरउपेक्षित आ' पछुआएल केवट परिवारमे जन्मलय 'भरोसी' कापड़ि कखन 'राम भरोस' आर तत्पश्चात् 'भ्रमर' बनि गेलाह- आभ्यंतरिक क्रान्ति ओ उपचेतनमे दबल सरसताक पात्र लै मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अलख जगबै लगलाह से एहि साधकक खेरहा त बड़ नाम अछि।

......मुदा ई तऽ निश्चित जे नेपालक मैथिली साहित्यकार लोकनि मध्य ई सभसँ बेसी प्रतिबद्ध हस्ताक्षर छथि! ई प्रमाणित करैछ जे ने तँ मैथिली कोनो जाति-विशेषक सम्पत्ति थिक आ' ने प्रतिभा सएह। एक्के हाथमे कलम ओ कुँची लेने ठाढ़ ई निर्भिक युवक सत्ते मैथिली साहित्यक लेल 'भरोस' छथि- कमसँ कम नेपालक सन्दर्भमे (उएह, गत्ता पर अंकित)।''

कखनो काल लगैत अछि- गुरुवरक एहि विश्वास आ भरोसकेँ

हम कायम राखि सकलिऐक! जहिआ ओ लिखलनि तहिया हम कविता टा लिखैत रही मूल रूपसँ। तएँ डॉ. मौन, सोमदेव, डॉ. धीरेन्द्र हमरा ताहि रूपमे देखने रहथि।

जखन हमर दोसर काव्यकृति 'नहि, आब नहि' प्रकाशित भेल (फरवरी, १९७९ई., २०३६ साल) तऽ ओकर आमुखमे, 'मुँहथड़ि पर' नामसँ प्रो. सोमदेव लिखलनि- "......... महासाधक आचार्य डॉ. धीरेन्द्रक पटाओल जनकपुर-साहित्य वाटिका केर सर्वाधिक समर्थ, दिनानुदिन झमटगर भेल जाइत समाजसेवी पत्रकार कवि राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केर नवजात काव्यकादम्ब "नहि, आब नहि" अपन संक्रमणकालीन व्यक्त चिंतनकेँ प्रखरताक संग उत्तम पुरुषक कथनमे प्रस्तुत करयवला कोनो नेपालीय आधुनिक मैथिल कवि द्वारा रचित आ' प्रकाशित सम्भवतः प्रथम दीर्घ कविता थिक (नहि, आब नहिसँ)।" बादमे जीवकान्तजी मिथिला मिहिरमे एकर समालोचना लिखि एकरा समस्त मैथिली संसारक पहिल दीर्घ प्रेम कविता घोषित कयलनि। एकर चर्चो खूब भेल।

जे से कविताक छान सँ ठाढ़ होइत महलमे भले आन-आन सामग्रीक उपयोग होइत गेल हो, मूलतः कविताक हक तऽ एहि कवि पर बनिगेल छैक आ सएह जखन अपन दायित्वसँ भागय चाहैत हो तऽ कनेक अन्याय तऽ छैहे। आ ताहु कारणें एम्हर कविता हमरासँ कटल कटल रह' लागल अछि। भलेँ हम अपन वाध्यता ओकरा कहैत रहलिऐअ। हमरा लगैए हमर गुरुवर लोकनिक हमर कविता पर जे जतेक विश्वास जमल रहैक, तकरे भेओ पकड़िकऽ ई आइ धरि नाचि रहलि अछि। समय-सालक विचार एकरो कर' पड़तै ने!

जखन हम मौन भऽ जाइत छी तऽ हमर कविता मुखर होइत अछि। तखने ओ अपन संगति आ हयवाक धर्म निर्वाह कऽ सकैत अछि। हम एहिना अलुल-जलुल लिखि कऽ पाट बैसलहुँ, आब तकरा फुराओत हमर कविता आ तखने हम बुझबै ई कतेक हमरासँ लग अछि आकि कनछी काटि हमरासँ अरारि ठननहि अछि।

ओना मैथिलीमे मूल्यांकनक कोनो परम्परा नहि छैक खास। ताहुमे नेपालीय मैथिलीमे। पुस्तक-समीक्षा लिखैत काल, भूमिका लिखैत काल लेखककेँ अतिरिक्त प्रोत्साहनक परम्परा रहलैक अछि, मोटा-मोटी सएह होइते छैक। फूटसँ समालोचना कमे लिखल जाइछ। एक आध पुस्तकक प्रकाशन एकर अपवाद भऽ सकैत अछि। एहन अवस्थामे कोनो कृतिक प्रणयन जोखिम पूर्णतँ छैक, मुदा आत्मसन्तोष धरि दैत छैक-चलु केओ पढ़ओ नहि पढ़ओ, कहओ नहि कहओ एकटा कृति तऽ आएल!

प्रश्न उठैछ की ताहि कारणें अपन ई टटका कृति अपने सभक सोझाँ आनल अछि! तऽ स्पष्ट कऽ दी कारण सएहटा नहि छैक। अपन कविताकेँ मनएबाक हेतु सेहो एकरा लाब' पड़ल अछि। अपन अनचिन्हार (१९९०) केँ अनला छब्बीस वर्ष भऽ गेलै। एहि बीच आन-आन बिधाक पुस्तक सभ अबैत गेलै। स्वाभाविक छै कविता पछुआ गेल, छिड़िआ गेल, दुख आ क्षोभ तऽ बनबे करैत छैक। एहु संकटकेँ टारबाक हेतु एहि संग्रहक ओरिआओन कर' पड़ल आ से अपने सभक हाथमे अछि। कहल जाइछ- कविता कविक अयना होइत छैक, जाहिमे ओ अपन सरूपकेँ बेर-बेर देखि सकैत अछि। हम निरन्तर तकर फिराकमे रहै छी। ई हमर दुर्भाग्य वा सौभाग्य भऽ सकैए- ऐने जँ धोन्हिया गेल हो, अपने अनुहार पर मुखौटा सभक चक्रचालि-चलखेल होइत रहल हो आ हम ठीकसँ ऐनाक पारदर्शिताकेँ उपयोग नहि कऽ पाबि सकल होइ। ऐनाक अवस्थासँ जँ हम गफलतमे पड़ियो गेल होइ तँ हमर पाठक हमरा एहि अनिर्णयक अवस्थासँ अवश्य मुक्त करताह आ अपन भाव सृजनक माध्यमसँ हमरा सचेत करवैत रहताह।

हमर एहि संग्रहक कविता सभकेँ देखिकऽ अपन स्नेहसिक्त वचनसँ हमरा आप्लावित कयनिहार आ. भीम भाइकेँ हम कोन मुँहें साधुवाद दिअनि। ओना हमरा पर कृपा ओ 'मिहिर'क समयेसँ करैत आवि रहलाह अछि। चन्द्रेशकेँ आभार मात्र औपचारिकता लेल। ओ एना परिवारक अंग भऽ गेल छथि जे अपने कएल भोजमे कतौ अपने समांगकेँ माला पहिराओल जाए............।

कोजाग्रत पूर्णिमाः २०१६ जनकपुरधाम,

— रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

अनुक्रमणिका

खण्ड : 1

खण्ड : दू

खण्ड : तीन

खण्ड : एक

युद्धभूमिक एसगर योद्धा

प्रसंग-एक

आइ अश्वमेघमे छोड़ल घोड़ाकेँ
हम पकड़ि लेने छी।
मुदा, युद्धक सामना हम नहि कऽ सकै छी,
ओना हम भ्रमवश अथवा उत्सुकतावश मात्र
एहि घोड़ाकेँ घेरिकऽ बन्हने छी से नहि,
अपन अतीतसँ पीड़ित
कोनो निश्चिन्त ठामक खोजीमे बौआइत
अश्वमेघक घोड़ा देखिते
हमरा भितरक पौरुख जागि उठल रहय
आ हम घोड़ाके पकड़ि बान्हि देने रहिऐक।
मुदा सम्राटसँ लड़बाक बाध्यता
हमर शक्ति संतुलनकेँ गरबड़ा देने अछि
हम अपनाके कमजोर महसूस करैत छी!
हम सेनाविहिन निरिह योद्धा जकां
अपन पौरुष प्रति स्वयं लज्जित भऽ गेल छी।
हमरा अपन निजी सामर्थ्य प्रतिक हमर विश्वास
विशाल युद्धभूमिक बाधा-संकट नहि हटा सकत
नहि रोकि सकत चक्रव्यूहक अस्त्र,
हम जे बन्हने छी ई तमतमायल घोड़ा
हमर घर-दरबज्जाक शान भले बढ़ा दिअए

कनेक कालक हेतु निखारि सकैछ हमर पौरुष
मुदा, हमरा लग शानके रक्षाक हेतु
नहि अछि पर्याप्त सैन्यबल,
हमर विगत हमरा एसगरे युद्धभूमिक मुंहथरि लग
ठाढ़ कऽ देने अछि।
आइ हमर स्वयं केर एकाकीपनक अनुभूति
अश्वमेघक एही घोड़ाक उपस्थितिसँ भेल अछि।
प्रश्नचिन्ह लगएबाक स्थितिक निरूपण
घोड़ाक उपस्थितिकेँ कायम रखबाले'
युद्धक अनिवार्यतासँ भेल अछि।
आइ पहिलबेर हमरा अपन निरिहता, कमजोरी
आ अस्त्र-शस्त्र विहीनता प्रति
दुख भेल अछि,
हमरा द्वारा छोड़ल संघर्षक
कठोर पदचिन्ह सभ
सेहो हमर उत्साहके टिका नहि पावि रहल अछि
हमरा भितरमे उर्जाक संचार नहि कऽ पावि रहल अछि
आइ हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ युद्धभूमिक मुँहथरि पर
स्वयंकें ठाढ़ पबै छी-
हमरा हाथमे अश्वमेघक घोड़ाक लगाम अछि
आ आगामे अछि युद्धभूमि,
हम ने तऽ घोड़ाके छोड़ि पबैत छी
आने लड़ाईएमे जयबाक साहस जुटा पवैत छी।

प्रसंग-दू

मुदा, टिकल तऽ छी
अपना चारू कात सनसनाइत तीर, बर्छी, तरुआरिक स्वर,
तोपक गर्जन, मार-काटक ध्वनि
हमरा अपन दृढ़तासँ डिगा नहि सकल अछि
आ युद्धक एतेक नम्हर लड़ाइमे लड़ैत

एखन धरि ठाढ़ रहि पौलहुँ अछि।
ई फकत स्पृहा वा बान्ध्यता नहि रहैक
स्वयंकेँ स्थापित करबाक जनून रहै
जे एसगरियो एहि अश्वमेघक घोड़ाकेँ
पकड़ि लेबाक साहस देने रहए!
पता नहि एहि लड़ाइक क्रम कहिया धरि चलत
एहिमे ने कोनो नियम छै
आने ककरो नेतृत्व!
ई तऽ महज अस्तित्वके लड़ाई छै
दशकोसँ भाषा-भूमिकेँ
अतिक्रमण कऽ रौब जमबैत सामन्त सभक
चक्रव्यूहमे पड़ल विचार आ विवेचनाक
सैन्यशक्ति, सभ निरिह भावें
अपने घर, जर आ जमीनसँ
बेदखल हयबाक दर्दकेँ सहैत आयल अछि
मोने मोन अपनाकेँ असहाय, बन्दी
आ कमजोर मानैत मनमे विद्रोहक
ज्वालामे जरैत आयल अछि।
तेहने ज्वालाक आवाज बनि ठाढ़ हम
अनचोकेमे सही
एहि अश्वमेघक घोड़ाकेँ पकड़ि लेने रही।
आ तखन लागल छल -हम ठीके
एकटा नमहर लड़ाइक शुभारंभ कऽ देने रहिऐक
से.......
आइयो ई चलि रहल अछि, चलैत रहत
पता नहि, एहिमे के जीतत, के हारत
अथवा ने केओ जीतत, ने केओ हारत
बरु अतिक्रमित भूमिक स्वामित्व बदलतै
आ सभ गोटे एक्के संग
घोड़ाकेँ अभिषेक करत!

सभतरि एक्के भाव, एक्के भंगिमा
आ एक्के स्वर हयतैक
ने कतौ भाला, बरछी, तरुआरिक
सन-सनाहट रहतै
आ ने कतौ तोपक गर्जन!
सभ तरि शांति रहतैक
प्रेम रहतैक, सद्भाव रहतैक
एक्के नाराक बोली रहतैक
एक्के वचनक भाषा रहतैक
ने ककरो जीत रहतै
ने ककरो हारि हएतै
आ ने कोनो योद्धाकेँ
एसगर रहबाक संताप रहतै।।



सलीब पर टांगल एकमुट्ठी इजोत

अहाँ बाजी, भूकी अथवा चिचिया कए
संसार माथ पर उठाली
कोनो फर्क नै पड़तै, अहाँ इन्कलाब लाबि नहि सकैछी।
गति वैह हैत जे भेल रहै कहियो
जीविते सूलीपर चढ़ा देल गेल कोनो ईशाकेँ!
मनुक्खकेँ मनुक्खेटा भ' कऽ रहबाक हेतु
कहब, अपराध भ' गेल अछि।
तेँ हम विश्वस्त छी-
अहाँ कोनो तरहक बदलाओ लाबि नहि सकैछी?
जिनगीक तेहने शव्दक अर्थ देबाक परिणति थिक
इन्कलाब - एकटा बदलाओ, एकटा नव वाटक अनुसन्धान।
मुदा, सामाजिक जड़ताकेँ तोड़बाक हेतु बढ़ैत
किछु जोड़ा पैरक धमधमाहटि
कानमे तूर ठूसि मस्त निन्नमे सूतल
किंवा आराम करैत एहि युगकेँ
कोनो असरि नहि पहुँचा सकैछे।
जाड़ा मासक भोर जकाँ
छातीसँ सटौने गर्माहटिक अनुभूतिक
अपन फूट आनन्द होइछ,
आ तएँ मुट्ठीभरि किरिनक धाहीक बलपर
गर्म दिनक कल्पना सोनितमे

प्रवाह अनैत छैक
आ इन्कलाबक नारा कोनो नव क्रान्तिकेँ
सूत्र-पातक हेतु पृष्टभूमि बनिकए ठाढ़ भए जाइछ।
बरु इएह सूत्रपात करबाक सूत्र
अहाँक चिचिऔनीकेँ अर्थ दैत अछि
अहाँक मनुष्यताक रक्षा करैत अछि।
नहि तँ, कनेक सोचिऔ?
हरि सकबै गाममे जुआन बेटीक पीड़ा भोगैत
कोनो बापक दर्द?
घरखर्चीक जोगाड़मे घरवालीक सौदा करैत पतिक मजबूरी?
सत्य तँ ई थिक बन्धु!
बेनग्न समाजक किरदानी
मान्यता प्राप्त कए चुकल अछि
बलात्कार, हत्या किंवा चोरी डकैती
संस्थागत भए गेल अछि।
तखन अहाँ ककरा लेल चिचिआएब?
जाति, धर्म, भाषा, भेषक नामपर
खण्ड, खण्ड भए अपन सतीत्वक सौदा करैत
कोनो नगर कन्याक हेतु, से
ककरा पक्षमे आवाज उठएबाक अछि?
भ्रष्टाचार, घूस, अत्याचार किंवा
मानव अधिकारक खुलेआम होइत उल्लंघन हेतु?
वेरोजगारी, सोर्स अथवा घर बैसल
दरमाहा उठएबामे चसकल हाकिम सभक हेतु?

ककरा हेतु?
की अहाँकेँ लगैए-सूली चढ़ि मसीहा बनि जाइ।
नहि बन्धु नहि!
अहाँकेँ सूलीपर चढ़ा आत्महत्या प्रमाणित कए देल जाएत!
मुट्ठी भरि किरिनक बलपर

विराट अन्हारसँ लडबाक हेतु
अनुगूंजित अहाँक इन्क्लाबक नारा
अन्हारमे भेतिआकए दंम तोड़ि देत!
आ' ओ मुट्ठीभरि किरन बेताल जकाँ
सूली पर जा टंगा जाएत।
आइ जरूरी छै ओहन इन्कलाबक
जे सूली पर टांगल मुट्ठीभरि इजोतकेँ उतारि
सगरो संसारमे छिरिया दैक,
खूजि जाइक लोकक आँखि
देखि सकैक अन्हारमे ताण्डव नाच करैत अपन छायाकेँ
बूझि सकैक जिनगीक अर्थ
छुटिआ सकै, -मनुष्यता आ' नृशंसताक भेद।
तें एखन मात्र आँखि चाही
आ' चाही हिम्मत आ' विशवास
लोकमे जिनगी बाँटि सकबाक ऊहि
आ' तकरा लेल उतारय पड़त
सूली पर टांगल इजोतकेँ।



कोना कऽ ठाढ़ भऽ गेल अछि ई छहरदेबाली

हमरा आ पलटु भाइक दरवज्जाक बीचमे
कोनाकऽ ठाढ भऽ गेलै ई छहरदेबाली!
काल्हिए तऽ हम आ ओ-
गरदनिसँ गरदन सटा
कुशल-क्षेम पुछने रही,
एक-दोसराक दरबज्जा पर
पानि हेरएबाक कएने रही आग्रह;
मुदा, आइ पौ फटिते
हम अपन दरबज्जाक
सोझाँ-सोझीमे ठाढ़
एहि छहरदेबालीके ँ देखि
आश्चर्यमे पड़ि गेल रही।
कोना कएलकै पलटु ठिकदार
एहन किरदानी,
की देखलक ओ हमरामे
अथवा कोन हमर काज
ओकरा अपनासँ
ऊँच अथवा नीच लगलैक,
ओ राताराती हमर दरबज्जा
घेरि देलक अछि,
अथवा स्वयं छहरदेबालीक ओहिपार

नुका गेल अछि!
दुनूस्तर पर ई प्रसंग
भऽ गेल अछि दुखद हमरा लेल।
हम हुनक न्योतके नहि कऽ सकलहुँ पूरा
से त' अछिए-
अपन दरबज्जा पर
हुनका द्वारा हेरायल गेल पानिसँ
पवित्र हयवाक मनशाय सेहो
नहि भऽ सकल पूर,
हम अपूर्ण रहि गेलहुं।
ई अपूर्णताक बोध-
छहरदेबालियोक उँचाईसँ उपर भऽ
हमर मोनके ँ
खण्डित कऽ रहल अछि,
हमर मजबूरी त इहो अछि
हमर पलटु भाईसँ
इहो नहि पुछि सकैछी
छहरदेबाली किए लगा लेलक ओ!
ई स्वयं लगौने अछि
अथवा केओ
दुनूक दरवज्जाके ँ बाँटबाक हेतु
कऽ देलकैक अछि ठाढ़ एकरा!
एहि अनुत्तरित प्रश्नक बोझ लेने
अकुला चुकल अछि मोन,
कयक घंटा भऽ गेल अछि
मुँह देखला,
कुशल-क्षेम पुछला!
एक-दोसराके ँ देखिते
उगि अबैत ठोरक मुस्कीक अनुभूति
भितरधरि खखोरि देलक अछि;

तखन?
एक हाथमे पानि भरल लोटा
आ दोसर हाथमे खन्ती लऽ
आगाँ बढ़ि पड़ै छी-
तोड़बा लेल छहरदेबालीकेँ।
जखन देबाल टूटिकऽ खसि पड़ैछ
तँ हमरा आगाँमे
एक हाथमे पानि भरल लोटा
आ दोसर हाथमे खन्ती लेने ठाढ़
देखि पड़ैछ पलटु भाइ सेहो!



बरसैत मेघक नाम एकटा अपील

लगैए, आबि गेलै मानसून!
कएक रातिसँ
अनेरे उझिलैत वर्षाक पानि-
मेघो अपस्याँत भऽ गेल हयत,
बाधित भऽ गेल अछि,
सभ दैनिकी! फूहीक बुन्न
आ विजुरीक कड़कबमे
छहोछित भऽ गेलासँ
मोनो आजित भऽ गेल अछि!
लगैए, तएं समय घुमलैए
'जट-जटिन' गीत सुनबासँ पहिने
आ भतखोखरी बुढिआक गारि
पढ़बासँ पूर्वे
किंवा वेंगकेँ कुटबाक
कष्टदायक क्रिया आ ताहिसँ
उठैत निरिह प्राणीक आर्त्तनाद
कानमे जाएसँ पूर्वे
इन्द्र एहिबेर सम्हरिगेल छथि,
इन्द्रासनमे परी सभक मोहक नृत्यो
ओकरा सचेत हयबासँ
नहि रोकि सकलकैक अछि!

खाली समयमे समदिया बनि
रने-बने बौआइत मेघदूत सभकेँ
काम प' लगा देने छैक,
आ ओ सभ उझलि रहल अछि
मोटाक मोटा पानि,
हम सभ प्रकृतिक एहि लीलाकेँ
चुपचाप देखि रहल छी
भोगि रहल छी।
एहि भोगबमे निरिहता नहि,
आनन्दक अनुभूति अछि।
अनचिन्हार होइत जाइत
अपन माइक बोली जकां
अपन धरतीक
फटैत छातीक पीड़ा बुझने
पानिक ई बुन्न
इन्द्रक चिरल कनगुरिआ आँगुरक अमृत
अपना संग नेने
पृथ्वीपर आबि गेल अछि;
जुड़तै धरतीयोक छहोछित छाती
अपन गाम अपन खेत
अपन खढ़िहान, अपन चेत
सभ किछु भेटतैक,
आ जखन भेटतै अपन गाम,
अपन खेत, अपन खढ़िहान
त' लहलहाईत फसिलक
सुमधुर अनुगूंजित स्वरसँ
एकटा आर वस्तु मोन पड़तै
अपन माय, अपन परिवार
अपन समांग आ अपन भाषा
फेरसँ एकबेर लोक लौटत ग'

अपन जमीन पर!

ई वर्षा सरिपहुँ, महज पानिए नहि
लोकमे चेतनाक
सेहो कऽ रहल अछि संचार,

आबह हे, वर्षा रानी!
काठमाण्डूक अंगनामे
ठेहुन भरि पानि लगलो पर
नहि चढै छैक ककरो जीह पर पानि,
लऽ चलह अपन दूतसभकेँ
ओत्त जत्त' हमर माय,
हमर खेत, हमर खढ़िहान
आ हमर धरती;
हमर गाम, हमर घर
जकरा छै मात्र
तोहरे पर भर!
तखने पुष्ट हयतै संस्कृति, भाषा!
तखने पुरतै लोकक
वर्षहुक आशा!
तएं हे मेघ,
बरिस, बरिस, खूब बरिस
मुदा, गामे दिश बरिस
मात्र गामे दिश।



मनुक्ख आ रोबोट

मनुक्खक आविष्कार बनल रोबोट
बहुत किछु करैत अछि।
गाड़ी चलबैत अछि, जहाज उड़बैत अछि
बन्दुक बोकैत अछि, बम फोड़ैत अछि!
मानव जे नहि क' सकल
खतरा कामसभ
रोबोट करैत अछि!
हमसभ गौरवान्वित होइ छी
निर्माणक दंभ आ शक्तिक भ्रम
नस-नसमे भरैत अछि।
मुदा, जखन आदमी
रोबोट भ' क' बाँचऽ लगैछ-
दोसरक सिखायल पाठ घोस' लगैछ
दोसरक देखाएल बाट चल' लगैछ
तखन मनुक्खक बनाओल रोबोट
लाजे मूडी गोतने रहि जाइछ
बुद्धिमान मानवक भव्य चित्र
ओकरो नजरिमे ढहि जाइछ!
तखन -
विज्ञान आ मानवक सम्बन्ध
एक बेर फेर प्रयोगशालामे जाँचल जाइछ
तकरा बाद -
रोबोट नहि
मानव निर्माणक ढाँचा साँचल जाइछ!!



सिंहदरबारक मुंहथरिसँ

हे सिंहदरबार!
सादर प्रणाम, गोर लगैछी।
तोरे गर्भगृहमे प्रतिष्ठापित छथि
हमरा सभक अन्नदाता
तीन करोड़ नेपालीक भाग्यविधाता,
हम त' निरिह एकटा नेपाली जनता
कमजोर, पहुँच विहिन, परिचय विहिन
नागरिकता विहिन
ताहुसँ अशोथकित कए दिनसँ
अपन देवताकेँ, अन्नदाताकेँ
दर्शनार्थ दक्षिण मुँहक मुँहथरि पर
अहुरिया काटि रहल छी।
हे, सिंहदरबार,
अहाँक परिसरमे पूजित,
तीन करोड नेपालीक इष्टदेव
राजनेता लोकनि,
हमरा सभक छातीपर मूंग दरड़ैत सभक
कारणेँ उपजल पीड़ासँ अनभिज्ञ
छप्पन कोटि देवताक अंश लऽ
धरतीकेँ दलमलित कएने
छव सय एक सभासद,

सभके हमर प्रणाम कहियौ,
ओ सभ धन्य छथि,
हुनका सभक दर्शन दुर्लभ अछि।
हुनकासँ मनोकामना पूर्तिक आशा निरर्थक होइतो
दरबज्जापर धरना देने,
एकटंगा धऽ प्रतीरक्षारत छी,
आशायुक्त छी
अओता जरूर, देखबो करताह
आ हमर मोनक व्यथा बंटबो करताह।
सोचै छी, मंदिरमे बसल भगवान लैत किछुने छथि
मात्र काज लगैछै हृदयसँ मांगल मोनक कामना
विश्वास छै-भगवान सुनै छथि, समयपर करबो करैत छथि!
मुदा, हे, सिंहदरवार!
अहाँक सिंहासनपर
घिरनी जकाँ नचैत प्रतिष्ठापित
ई अन्नदाता भाग्यविधातालोकनि।
ने सुनैत अछि, ने किछु दैत अछि।
लैत जरूर अछि!
लोकक चैन, लोकक शांति
कामक आशामे
दिन भरि पछोड़ धएने लोकक कान्ति।
दुनू भाग्यविधातामे बस इएह अन्तर अछि-
एकटा मात्र दैत अछि, लैत किछु नै अछि।
दोसर मात्र लैत अछि, दैत किछु नै अछि।
हमसभ दुनू विधाताके पूजैत छी-
एकटाके मनके शान्तिक लेल, सुख समृद्धिके लेल
संकट विपदा टारबाक लेल,
दोसरके पूजैत छी-
मात्र बाँचक लेल, जहिना छी तहिना जीबाक लेल।
ताहु दुआरे जाहि अवस्थामे छी-

सुखसँ, सन्तोषसँ बाँचि सकी से
अहाँक दरबारक मूर्ति सभसँ विनती करबाक लेल
एहि दक्षिणबरिआ दरबज्जापर आँखि पसारने पड़ल छी।
मन होइअ-एक बेर अपन भाग्यविधाता
प्रभुके दर्शनकऽ लैतौं,
मुदा, बेटीके विआहमे
बेचल अपन घराडीक चारि पुस्ते विक्रीनामा
कतबो देखौलिऐक
दरबज्जापर ठाढ़ भेल सिपाही मोजरे नहि देछै
हमरा चिन्हबे ने करैत अछि
हे, सिंहदरबार!
एहि बेरका चुनाओमे हमरा सभक भाग्य विधाता
गोरधरिआ दऽ दऽ कऽ नीक जकाँ चिन्हि आएल छथि
कहने रहथि रोजगारी देब, पढाइ देब, पैन आ
सड़क देब। नै जानि की की!
लगैए आन सभ बिसरि गेल हो, हमरा त' चिन्हबे करता,
कएक साँझ हमर नून-रोटी खएने छथि।
से कनिक समाद पठा दितिऐक त बड़ भल होइत।
एक बेर आबिकऽ हमर नाम बजा दौक,
हमरा हमर मनोकामना पूरा भऽ जाएत।
लागत नून-रोटीक संग एक अदत भोट
बेकार नै गेल हमर!
देखल जएतै, एक पंच बरसी आर हमसभ
गरिबीमे जीबी लेब। मठ-मन्दिरमे भगवानके गोहरा लेब,
धीयापूताके सुखाएल सुन्न आँखिमे
विवशता, दुःख, भूख, गरिबी आ अशिक्षाक टघरैत नोरके
पीबि लेबै सभ परानी।
हे सिंहदरबार!
वस, एक बेर कहा पठा दिऔ,
सिंहासनके छोड़ि हमरो सभक अनुहार मात्र देखिलेथि,

तकरा पढ़बाक जरूरति नहि, कोनो श्रम करबाक नहि छैक।
ओ प्रसन्न रहथि, पबैत रहथि, मस्त रहथि।
अगिला पंच बरिसा धरि सभ किछु खेप लेब।
आब तँ बज्जर भऽ गेल अछि छाती,
टुइआँ भऽ गेल अछि पेट,
मरुभूमि भऽ गेल अछि आँखि,
मोनमे पलैत कतेको वसन्त ठुठ्ठ भऽ गेल अछि।
से हे, सिंहदरबार!
वस, एक बेर दर्शन करा दिअ
हमरा सभक भाग्य विधाताकेँ
हमरा सभक प्रभु तारणहारकेँ
बस, एक बेर!



बिहारिके तरहत्थीसँ रोकबाक प्रयास नहि करू!

जखन अपने वनाओल मर्यादाक देबाल
बाधा बनऽ लगैछ,
अपन आस-परोसक लोकक नजरि
कटाह भऽ जाइछ,
स्वयं अपना घरक लोको अनचिन्हार सन बूझि पड़य-
तँ बुझबाक चाही-
कुसमय मे कोनो सूखल गाछक
डारिसँ कनोजरि जनमि आयल अछि।
मुदा.....
सम्पूर्ण बासन्ती अनुरागक सुवास लेने-
उगि आयल कनोजरिक मह-मही
की अहाँ महशूस कऽ सकै छी बन्धु!
अनुमान केलियै ए-
ऋतु चक्रक व्यामोहमे ओझरायल
राग-अनुरागक सम्पूर्ण बासन्ती अनुभूति
कोना विद्रोह कऽ कऽ उगि आयल अछि।
ई कुसमयक हवा
आनक संगे अहुके चौंका देने हयत,
तीत लाग' लागल होयत ओकर उपस्थितिककुस्वाद!
इतिहास साक्षी अछि-
सत्यकेँ स्थापित करयबाक हेतु अनवरत सघर्ष-

चलैत आबि रहलैए-
जे पेटसँ मुह धरिक हेतु मात्र नहि
दुनूक बीच अवस्थित कोनो सम्वेदनशील
अवयवक तुष्टिक हेतु सेही होइत अएलैए!
कोनो खाली ठामकेँ भरबाक हेतु
हवाक वेगक आकुलता नापल गेल अछि कहियो?
अन्हर - बिहारिक नाम सँ बदनाम तँ कऽ देल जाइछ
मुदा, ओकर तीव्र वहाबक भितर
जूड़वाक जे छटपटाहटि होइछ-
ओकरा के देखलकैक अछि?
तएँ हे मलिकाइन -
इतिहासक पुनरावृतिक आशंका
अहाँक हृदयकेँ कमजोर कऽ देने होयत'
आव भऽ गेल हयत शेष बंचल-खूचल बुद्धियो,
मुदा, अहींक उष्णतासँ खलिआयल हवाकेँ
भरवाक हेतु चल अबैत वायुवेगकेँ
निपट तरहत्थीसँ रोकबाक
अहाँक हठधर्मिता -
नोक्शान छोड़ि फायदाक
कोनो संभावना नहि देखबैत अछि।



सूर्योदयक प्रतीक्षा

फागुनक एकटा सर्द भोरमे
होटल 'कन्ट्री भल्ला'क एहि कोठरीमे
गर्म सिरकक बीच दुबकल
कऽ रहल छी सूर्योदयक प्रतिक्षा।
कहाँदन पहाड़क दोग दऽ हुलकी मारैत सूर्य
आ तकर लल्हकी किरिनसँ नहायल
पहाड़क ऊँच-नीच चोटी सभ
एकटा अलौकिक दृश्य उपस्थित करैत छैक।
तएँ जाड़क एहि भोरमे
प्रतीक्षा अछि ओहने दृश्यक
जकरा देखबाले सात समुद्र पारक लोक सभक भीड़
एत्त जमल रहैत छैक,
एखनो अछि।
कनेक भोर फरिछाइ छैक
रुईक फहा जकाँ मेघ आ उज्जर बरफक
चादरि ओढ़ने पहाड़क उच्च चोटीक श्रृंखला,
जेना एहि जाड़क भोरमे सिरक ओढ़ि
हमरे जकाँ कऽ रहल हो सूर्यादयक प्रतिक्षा!
सूर्यक गर्मी दुनूक लेल गर्माहट
आ आनन्दक विषय भऽ सकैछ,
मुदा, ओकरालेल ई नियमित प्रक्रिया छै -

हमरासन यात्री त' महज किछु दिन, घण्टाक लेल ने।
जे से हमसभ अपन-अपन सुतबाक स्थानसँ
सूर्यक लालीक अनुभूति करबाले बेहाल छी
दूर-दूर धरि सालक घनघोर जंगल,
जंगल बीच बनाओल छोट-छोट रिसोर्ट
आ ओहिमे प्रकृतिक आनन्द लैत विदेशी जोड़ी सभ-
सम्भव थिक हमरे सभ जकाँ कऽ रहल हो
सूर्यक प्रतीक्षा!
एहि ठाम इएह प्रतीक्षाक भूख
सयो लोकक पेट भरैत छैक,
जीविकाक एकटा आधार दैत छैक
जिन्दगीक अर्थ होइत छैक।
अपन छाती पर शीतक बुन्नक भार उघैत
शालक पातो प्रायः सूर्येक प्रतीक्षा कऽ रहल होइछ-
सूर्यक गर्मीसँ हटतै गऽ पानिक बुन्न
आ हल्लुक हयतैक ओकर छाती!
से... सूर्य आइये कोना स्थिर भऽ गेल अछि गर्भमे,
प्रकृति किएक बदलि रहलैक अछि अपन नियम?
कहाँ कतौ देखै छिऐ' पता सूर्यक?
नहि, चिड़ै-चुनमुनक चिचिआहटिक बीच पुबारी आकास पर
पसरि रहलैक अछि लालिमा-
जेना दरबारीसभ हाक लगा रहल हो-
सावधान, सम्राट सूर्यक आगमन भऽ रहल अछि!
आ पहाड़क चोटीक दोग दऽ
हुलदऽ एकटा लल्हका चक्की बहराइत छैक,
लल्हकी किरनक अनुभूति जेना हमरा मोनकेँ
भीतर धरि सिहरा देलक अछि-
हम अनुभव करैत छी
ओत' पहाड़ सभ सेहो सिरकक दोग दऽ
हुलसिकऽ स्वागत कए रहल अछि सूर्यकेँ,

शालक गाछ जेना मस्तीसँ झूमऽ लागल अछि
विदेशीसभ आँखि सेदऽ लागल अछि
माने नगरकोटक एहि होटलक
सम्पूर्ण परिवेश मुग्ध भऽ सूर्यक गोलाइ
नापऽ लागल अछि-
जेना अपने आगाँ किछु मीटरक दूरी पर
सूर्य आबि रहल हो! खिलखिलाइत, फूलझड़ी छोड़ैत।
दुत्, कहाँ लगैछै ई क्रूर।
केना कऽ इएह सूर्य
जनकपुरमे भऽ जाइछ राक्षस,
लोक एकरा देखिते घरमे नुकएबाक करैछ प्रयास,
एत त' ई वरदान भऽ गेल अछि,
मित्र अछि, जकरासँ भेटबा ले
कत्त ने कत्तसँ लोक एत्त जूटल अछि
नगरकोटक एहि परिसरमे।



अन्हारक विरुद्ध

उपर अन्हार
नीचाँ अन्हार
वाम अन्हार
दहिन अन्हार
चारूभर घनघोर अन्हार,
अन्हारक एहि विराट साम्राज्यमे
अपनाकेँ समेत चिन्ह नहि सक'बला
भयावह रूपान्तरणक क्षणमे
कतौ कोनो कोनसँ चमैक उठैत
इजोतक महीन रेखाक
आशमे बांचब आब
कठिन भऽ गेल अछि!
कत' अछि इजोत?
ककर बन्दी भ' क' रहिगेल अछि इजोत ?

हमरासभक बाँहिक बलपर
अभिभावक बननिहार लोकनि!
कहियाधरि हमरा सभक छाती पर चहरि
अन्हारकेँ आर घनीभूत बनबैत रहबै,
निकासक खोजीमे
एकमुठ्ठी इजोतक हेतु

छटपटाइत जन समुद्रक गहिराइमे
बनैत-बिगडैत ज्वारसँ
अहाँ अनभिज्ञ हएब, नहि लगैए!
समुद्रमे होब' लागल हलचल
विपरीतगामी हवाक
त्रासयुक्त सिहकीसभ
सुख-शांति, मौज-मस्तीक पक्के संकेत नहि थिक;
ई त' आब' बला सुनामीक चेतौनी थिक।
इजोतकेँ अपन स्वार्थक खातिर
आब आर बेसी समय धरि
बन्दी नहि बनाओल जा सकैछ।
कतेको बलिदान, तपस्या, आकांक्षाक फलीभूत
अपेक्षित इजोतकेँ
अवश्यम्भावी छैक उतरब एहि धरतीपर।
आ जीत हएतै जरुर
अन्हारक विरुद्ध लडैत
उपेक्षित, अपेक्षित सन्तानक!



अहांक प्रकाश लगैए घोखा थिक!

बहुत दिनक वाद-
अहांमे हम एकटा प्रकाशपुंज देखने रही
सोचने रही-
अहाँसँ बहराइत एही प्रकाशक रेखामहक
मुठ्ठीभरि इजोत अपना लेल मांगिली,
अन्हारमे रहबाक विवशतावश
पात्र-कुपात्रक विचार कऽ कऽ नहि-
कऽ बैसलहुँ मुट्ठी भरि इजोतक याचना अहाँसँ!
लागल रहय-अहाँसँ उधार लेल
इजोतक किछु टुकड़ीक संग
क्षण भरि इजोतमे रहबाक
भ्रम पोसि लेब!
मुदा, हमर निर्दोष याचनाके ँ
अहाँ अपन आडम्बरसँ
अपवित्र बना देलहुँ,
प्रिय, इजोतक कामना कर' बला
अभ्यस्त होइत अछि अन्हारक!
अपन परिवेशके ँ पवित्र रखबाक
अहाँक हठधर्मिता किंवा बचपना
स्वयं अहाँके अपन खिंचल लक्ष्मण रेखाक बीच
आदमजाते खड़ा कऽ दैत अछि।
सांच त ई अछि-
ई प्रकाश जे अहाँ अपन चारूकात समेटने घुमैछी
महज एकटा धोखा थिक,
आबत' बस एक्केटा कामना अछि-
इजोत नहि सही-
धोखे वाँटि दिए किछु क्षण!!



हम अहाँक अपेक्षा पूरा नहि क' सकब

हमरा लगैए-
हम अहाँक अपेक्षा पूरा नहि कऽ सकब!
देहभरि मसानक छाउर औंसने
अधोरीक विकृत अनुहार,
दानक हेतु बाध्य नहि कऽ सकैछ आब,
तपस्यालीन कोनो साधकक व्रत भङ्ग करबा लेल
छटपटाइत इन्द्रक ब्यथा सेहो
हमरा पता अछि
बन्धु!
शिवक तेसर नेत्रक कोपसँ
जरल कामदेव-रतिक कथा सेहो
जनमानस एखन विसरल नहि अछि,
अतीतक ई अनुभव सभ
साधनामे दृढ़ता लबैत अछि
पलायन नहि!
हम बढ़ि चुकल छी जाहि साधनाक बाट पर
ओ हमरा कतऽ ल' जायत-हमरा पता नहि अछि
मुदा, एहि पर चलबाक एकटा फूटे आनन्द छैक
जे अहाँ अनुभव नहि कऽ सकै' छी
मित्र हमरा नहि टोकू!
अहाँ नहि घुरा सकब हमरा!

अहाँ हमरा कमजोर करवाक प्रयास नहि करू!
हमरा चारूकात अहँक ओछाओल
काँटक टीसक अनुभूति अछि!
हमरा बाटमे खुनल खधिया सभकेँ
सेहो हम देखि रहल छी,
हम जे सिद्धान्त प्रतिपादित कयल अछि,
तकर गलत व्याख्या अहाँक मुँहसँ नहि सूनल अछि, से नहि
ई समस्त अहाँक प्रयास सभ
हमरा घुरयबाक उद्‌देश्य सँ जँ कयल गेल अछि तँ
बन्धु, हमरा लगैए -
हम अहाँक अपेक्षा पूरा नहि कऽ सकब!!



आकाश पर उड़ैत बाज

आकाश पर उडैत पड़बा
सुन्दर उज्जर पड़बा
चकभाउर दैत शान्तिदूत पड़बा
किए पाँखिकेँ अस्वाभाविक रूपेँ
फरफरबैत नीचा मुहें
खसैत सन लगैत
उतरैत आबि रहल अछि।
लिअ, थकथकाकऽ
बैसि गेल अछि
एकटा सामन्तक पंचमहला
घरक छत पर।
सम्भव थिक
प्रदूषित वायुमण्डलक लपेटमे पड़ि
अशोथकित भए
सुस्ताए उतरि आएल हो छत पर,
इहो सम्भव थिक
कोनो बाजकेँ देखि
भयभीत भए जान बचाबए ले
नीचां खहरि गेल हो।
सम्भव तँ इहो भए सकैछ
कोनो शिकारीक तानल
फँदाक व्यामोहमे फँसि

दाना लोभेँ आबि गेल हो छत पर,
मुदा, ई की!
एकरा लोलमे तँ सोनित छै लागल!
टटके, टप-टप टपकि रहलै-ए
सामन्तक पंचमहला घरक छत
लगसँ देखला पर
ई पड़बा कम बाज बेसी लगैत अछि!
नहि, ई हमर दृष्टिभ्रम नहि
ठीके पड़बाक ठोढ़
सोनितमे बोरल छै–
जेना कतौ कोनो जीवकेँ
ई कयने हो भक्षण,
बाज सभ आब हेराएल जा रहलै-ए
लगैए पड़बा सभक रूपान्तर
बाजक रूपमे भए रहलैक अछि!
हम देखैछी
सामन्तक पंचमहलाक छत पर
बैसल पड़बाक आँखि सभ
करजनी जकाँ लाल-लाल छै
चाङुर नमरिकए
कठोर आ' चोख भए गेलैक अछि
लोलक आकार बढ़ि
चोभिआ जकाँ लीबि गेलैए
पड़बा नहि बाज नहि
पता नहि, की की
ओ फेरसँ आकाशमे उड़ि गेलैए
आब अहरा बनय नहि
खोजबा लेल!!



इतिहासक दंश

इतिहासक निर्माण नहि होइछ।
ई तँ लिखा जाइत छैक–
जीवनक कोनो बितलाहा जीवंत आ मारुक क्षण
इतिहासक पन्नामे सन्हिया जाइत छैक
लोक इतिहास पुरुष भऽ जाइए!
इतिहासक निर्माण करबाक प्रबृति
स्वयंमे एकटा घातक प्रयास थिक,
अपनापर, अविश्वास, अपन व्यक्तित्वपर-
अपन कृत्य पर, अपन शक्ति पर अविश्वास थीक।
इतिहास बरोवरि लिखाइत रहलै-ए
के जनैत छल-
किछु वर्ष पूर्व अयाससँ निर्माण करबाक
कयल गेल प्रयासक परिणतिक सर्द कथा-
अनचोके-पुनरावृतिक रुपमे सोझाँ आबि सकैछ!
ओ वर्षक अन्वेषण-प्रयास आ आकांक्षाक
प्रतीक भइयोक' अक्रोश आ मारूक क्षणक-
दस्तावेजटा बनिकऽ रहि गेल छल-
हम ओकरा जीवंत कहियो नहि बना सकलहुँ!
मुदा, आइ-
कर्त्तव्य भावनासँ सम्पादित कोनो काजक पृष्ठभूमिमे
सम्पर्कक लालित्यमय घेरा

एकटा नव कथाक तथ्य मे निहित भाव,
बिछुड़ैत जिनगीक प्रति व्यामोह उत्पन्न कऽ देबाक
कृतज्ञता छैक अथवा
सुखायल गाछक डारिसँ
अनायास कनोजड़ि छोड़बाक पुलक,
मुदा, जाइत काल भरल नोरे बिदा मँगैत-
ककरो आँखिक अन्तर्कथा बुझबाक
प्रत्येक असफल प्रयास
हमरा आर दिगभ्रमित कऽ रहल अछि,
हम एकटा कुरुप आ अनसोहाँत इतिहासक
जहलमे कैद भेल जा रहल छी,
हमर जीवनक पूर्ण अस्वीकृति
नहि, आब नहि-जेना प्रकृतिक जिदिआह संयोगक आगां
छहो-छित्त भऽ जाइत अछि,
जिनगीक कोनो कोनमे मनुक्ख भऽ जीवाक
हमर तपस्या जेना भंगठि जाइत अछि,
फेर अपना आगाँ-पाछाँ छिडिआयल प्रत्येक संभावित
रूमानी क्षणकेँ भरि पांजकऽ समेटि लेबाक लौल
एक बेर आर अनर्थ करा दैत अछि-
एक बेर फेर केओ किछुए क्षणक सम्पर्कक अछैतो
डबडबायल आखिसँ-हमर बर्बाद इतिहासक
पुनरावृत्ति कऽ रहल होइछ,
आ हम आतंकित, दबकल-दबकल सन
एहि एक जोड़ी सोनाक डिवियामे बन्न
समुद्रक गहिराइकें स्थिर-भावेँ देखैत रहि जांइछी-
अविकल-थक-थकाइत!!



अभिमन्युक नियति

जकड़ि लेल जकरा कालक मजगूत जिजीर
घोसिया गेल जाकरा नस-नस मे
समाजिक विषमताक दुर्गन्धि
बुझाय लगैक जकरा अपने जीवन अनचिन्हार
अवश्यम्भावी थिकैक ओकर मृत्यु,
विनाश आओर असफलताक
ओकर कारण।
हमहुँ एहिसँ भिन्न नहि
परिस्थितिक प्रत्येक चरण अपन लौह भुजाक कसावसँ
चरमरा देलक अछि हमर अस्तित्व-पंजर
हम छटपटाकऽ रहि गलहुँ अछि।
(आह! कतेक असहाय छी हम)
हम जनैत छी
हमर प्रत्येक आर्ष वचन
स्वयं हमरे प्रति एकटा महान धोखा थिक
गद्दारी कऽ रहलहुँ अछि— हम अपन-आत्मासँ
मुदा, जीबाकलेल-थिक ई आवश्यक
आओर जीबाक अछि हमरो एखन बहुत दिन
तँए फुसियों आश्वासन, जीवाक दैत अछि
प्रेरणा आ सहवाक दैत अछि धैर्य।
से ससरि रहलहुँ अछि
एक-दू कए दिनक क्रमांक निरन्तर गर्वोन्नत
ओना छल - कपट, ईर्ष्या -द्वेषक
चक्रव्यूहमे फंसल एसकर अभिमन्यूक नियति अछि स्पष्ट।



एक मुट्ठी अपनैती

तृपित अत्माक बोझ लए
रनेवने बौआ रहलहुँ अछि हम
कुंठा संत्राससँ दग्ध हमर 'स्व'
कनेक प्रेम-अपनत्व पयबाले' रहल बैसल।
हम खोजल अछि-
समय परक मित्र सभक हेंजक मध्य
बाप-माय, भाइ-बहिनक बंशानुगत रिश्ताक
परिपार्श्वमे-
रुढिसँ मजबूर नेनहिमे पाओल
स्त्रीक अबढ़गाह व्यक्तित्वमे,
मुदा आह! ई तमाम रिश्ता-नाता
फूसिक आधार पर ठाढ़
हमरा दिगभ्रमित करैत बूझाइत अछि
सभ जेना हमर जर्जर मांशपिण्ड मे'
अपन-अपन भाग लेवा ले' भेल रहैछ अपस्याँत।
मित्र- धोखा, विश्वासघात
परिवारिक रिश्ता-स्वार्थ
स्त्री - अपनेमे अपस्यांत
सै-समाज - हमर रक्तक पीआसल
हमरा आगां हमर व्यक्तित्व ओहिना
छीड़िआयल बुझाइछ, खण्ड-खण्ड भेल!

जकरा पएवाले' समयक ताकमे
गदहाक खाल ओढ़ि हुड़ार सभक हेंजक अभिज्ञान
हम पओने छी।
आ तएँ छीडिआएल खण्ड सभकेँ पुनः जोड़बा ले
हम - यत्र - तत्र बौआ रहलहुं अछि-
हाथमे एकटा भिक्षापात्र लए!
हमरा मात्र दूटा प्रेम चाही।

जे हमर तृपित आत्माकेँ शान्ति दए सकैक
एकटा सन्तोष दए सकैक....!!



हम अहाँक संग जिबैत छी

हम अहाँक संग जिबैत छी
हम अहाँकें बिसरि नहि सकै छी-
ई अहाँ कोना बूझि लेलहुँ जे हम अहाँके
बिसरि गेल छी - हे भगवान!
अहाँक लगाओल सिनेहक ओ गाछ,
आब भरकदार भेल जा रहल अछि,
ओकर प्रत्येक डारि-डारिक हलचल
पात-पातक खर-खर
हम बरोबरि महशूस करैत रहैत छी।
हमरा बेर बेर अहाँ द्वारा कहल शब्द 'बेबी'
हमरा एखनो बताह बनओने अछि!
अहाँक बेनग्न देहसँ राति भरि सटल
एकटा अबोध 'नेना' क बचकानी तटस्थता
कहु' की बिसरय बला बात छैक?
जँ हम बिसरह चाहब तँ की अहाँ
बिसरए दऽ सकैत छी।
नहि... अहाँ फेर-फेर विभिन्न रूपमे
हमरा आगाँ आबि जीबि उठैत छी,
अहाँ स्मृति नहि - अनभूति भऽ गेल छी,
हम प्रत्येक पल अहाँके महशूस करैत छी
हथौड़ाक चोट लेल लहकैत

लोहारक पसार महक लोहासन अहाँक काया,
रौदीमे जरैत खेतके निर्मिमेष कृष्टिएँ देखैत
मजबूर (बरु, ग्लानिसँ भरल) किसान जकाँ हम—
कोना बिसरल जा सकैछ!
छातीमे हजार टुकडी मेघक जोड़ सटने
अकास जकाँ छहोछित अहाँ
प्रत्येक घटैत दावके अपना लेल
जीबाक लालसा रखनिहारि अहाँ
ठीके महशूस करैत छी!
संस्कार आ आदर्शक बात
बरोबरि हम सुनैत रहलहुँ अछि,
बरु भोगैत रहलहुँ अछि,
आ अपनाके 'बेबी' किंवा 'बुद्धु'
बनबैत रहलहुँ अछि बेर-बेर।
मुदा, आब प्रत्येक साकार होइत
जिनगीक प्राणवान कोनो क्षणमे
अहाँक प्रतिबिम्ब अभरैछ-
तखन हमर पुरुषार्थ ओजन पबैत अछि
मूल्य पबैत अछि।
तखन अहीं कहु
जिनगीक जाहि परम सत्यके
जकरा द्वारा पुष्टि भेल
तकरा हम कोना बिसरि सकैत छीऐ।
नहि, किन्हु नहि
हम प्रत्येक क्षण अहाँक संग छी,
अहाँके जिबैछी-अहाँके भोगै छी!

✦



परिवेशक नियति

हम आ हमर अगल-बगलक खोधरि
आ ओहि खोधरिमे ठहकैत किछु जोड़ि मनुक्ख
अपन अभावग्रस्त परिवेशक अछैतो-
पीयक्कर घरवलाक खुकुरी रम वा स्टार वीअरक
गन्धसँ भभकैत मुँहकेँ चुमैत मुस्किआइत युवती,
टी. बी. सँ ग्रसित सीकरेटीमे कमाइत घरवलाकेँ
पछीम दीशि बाट तकैत बचिआक जुआन मतारि....
पान खायल ठोर सन अपनाकेँ रंगने-छमकैत
बिधुआयल उमेरगर बापक बौह,
भोर-साँझ चाहक चुस्कीमे अपन स्टैण्डर्डके खोजैत
शर्मा परिवार
आर्थिक तन्त्र मन्त्रक जालमे ओझरायल
'भखरि' बिआहलि अपन 'स्वास्नी' (स्त्री) क संगे
रसभेर-निमग्न कोनो 'लक्की'...!

आ... एहि सभसँ बड नजदीक बरू किछु ऊँच
धन-सम्पति सभ तरहक सम्मानक संग जिबैत
खाली-खाली सन एकाकी एकटा युवक...!
जे सभ किछु पाबियोक' दरिद्रछिम्मड़ि भऽ गेल अछि
जकर अगल-बगलक खोधरिक ठहाका
बेर-बेर मरबा पर वाध्य कऽ दैत छैक,

आ अपनाकेँ ओो एहि कोठामे कैद बुझैत अछि।
गामसँ शहर धरिक ओकर कठिनाह यात्रा
देहकेँ सिहरा दैत छैक - बलेला ओ एतेक मरल
गामक परिवेशमे गमैआ भऽ जीयब
ओकरा ले' सहज होइतैक...!
ओ एत' आबि भोतिया गेल अछि,
अपनाकेँ बिसरि-'जिबैत' लोकक अनुभूतिकेँ सहेजि
किए ओ बोकलक एहि 'कम्पलेक्स'क बोझ माथ पर ?
किए ओ बिसरल अपन गाम अपन घर ??
कहियो, काल गाम गेला पर लोकके ओकरा नमहर
लोक बूझि सम्मान करैत देखि अपने अन्तर चिचिआ उठैछ
...नहि, हम किछु नहि,
अपने लगाओल आगिक प्रदाहमे जरैत एकटा चिता मात्र छी
जकर अभीष्ट छैक बनब एक मुट्ठी राख!
तएँ हमरा अगल बगलक खोधरिमे
समेटल बहुतरास खुशफैल जिनगीक अनुभूति
हमरा अन्तरक अन्तर्विरोधकेँ धधका दैत अछि,
हमरा टेबुल सभ पर टाल लागल पत्र - पत्रिका
आ किताबक ढेर,
हमरा पर मुस्किआइत प्रमाणपत्रक टुकड़ी
सब जेना लहर' लगैत अछि!
आ हम अपनाकेँ ओहिमे समस्त आकांक्षक संग
जरैत अनुभब करैत छी
पल - पल राख दिसि बढ़ैत!



गामक एकटा समाचार

जहिया जहिया गाममे रहि
हम शहर अबैत छी
तँ पाछाँ लागल अबैत अछि
गामक लोकक संगे एकटा सामाचार
जे हमरा परिवारक बूढ़-हमर रीतो काका
बाजल करैत छथि-
शहरसँ आबि एकटा कौआ
हुनक नाकपर बरोबरि लोल मारिदैत छनि,
ओ बरोबरि ओकरा भगयबा लेल
किवा नाकमे कौड़ी गाँथि उड़यबा लेल-छाल्ही, दूध
आ कि भातमे दवाइ मिला, छिडियबैत रहलाह अछि
मुदा, नहि जानि किए
कौओ दूध, छाल्ही आ कि भातसँ अघागेल अछि
अथवा ओकर रुचिमे कोनो परिष्कार
भऽ गेलैक अछि,
ओ बरोबरि दिन भरि घुमि-घुमिकऽ
छोटका लोकक टोलमे जा
ओकरा सभद्वरा 'नेराओल' अन्न
गीडैत रहल अछि!
आ ओ मोन मारिकऽ
कौआक मारल लोलसँ घबाह नाक
आ दवाइ मिलायल छिडिंआयल दूध, छाल्हि आ भात
निहारैत रहैत अछि!
जे जहिया-जहिया हम अबै छी गामसँ
ई समाचार पछोर धयने अएबे करैत अछि!



हंमर अपनो अनुहार अनचिन्हार किए लगैए?

आइ कयवर्षक बाद, अनुहार देखल अछि अयनामे
विश्वासे ने भेल जे
तिलकि चुकल केस, थाकल चाम
हमरे अछि ?
नै हमरा तँ अपन स्फूर्ति पर गर्व रहल-ए
कल्हुका काज आइ करबाक चाँखि
सदैब जगौने रहै छह
तखन आइ एना किए लागल अछि?
अएनामे देखल अनुहार हमर थकित भावनाक
अभिव्यक्ति किए बुझा रहल-ए?

किए, देखल अछि ऐना ?
हमरा तँ केहन चिक्कन बिनु अयनेकेँ
केस सीटबाक आदति रहल-ए,
स्नो आ पाउडर हम कहियोने लगेलहुँ,
लोक बनवाक फिकिर
एकटा मरुभूमिमे इनार खोदबाक
जोखिम उठबैत रहल-ए,
तेँ देखलिऐ समय कोना बितलै,

के सभ आएल - चल गेल बाट धयने,!
हम अपन बाट बनएबाले अपस्याँत
शून्यमे किछु गढ़वापर बाध्य रहलहुँ,
कहाँ देलक पलखति हमर विरासत
जे निश्चिन्त भऽ माथ धो केसमे तेल लगा
सीटि सकी,
स्नो आ पाउडर मुहमे पोति चिकनासकी-
आ अयनामे बेर-बेर अनुहार निहारि अपन सूरतपर
बेर-बेर मुस्किया सकी...!
प्रायः हम जुआनो ने तँ भऽ पौलहूं कहियो!
रागात्मक सम्बन्धक हमर वितलाहा प्रत्येकक्षण
धोखा बूझाइ-ए - भ्रम बूझाइ-ए।
स्मृतिक झीनपरदाक ओइपार
अस्पष्टसन किछु आकृति
हमर प्रौढ़ताक साक्षी भऽ गेल अछि!



हमरा अपन घर चाही

शहरमे रहैत-रहैत
कए बेर हम सोचैत छी
जिनगी ई कथी लेल?
कहियोकाल अप्रतिम सुखसँ
वंचित हयबाक भावक संगहि उठैत ई प्रश्न
अन्तरक द्वन्द स्पष्ट कऽ दैत अछि।
साँचे हम सभ जिबियोकऽ
बेर-बेर मरैत रहैत छी।
क्षण-प्रतिक्षण हमरा आँखिक आगासँ
गुजरैत संसारक मधुरतम् निर्माण
भीतरक स्वादकेँ आर तीताह कऽ दैत अछि,
एतुक्का परिवेशमे खपयबा लेल
'चरित्र' ठाढ़ करबाक हमर लालसा
दिग्भ्रमित होइत बुझाइत अछि।
(चरित्रक क्षणिक सुख सान्त्वना टा दऽ सकैछ, आत्मतृप्ति नहि)
'शून्यकेँ भरिपाँज कऽ समेटि लेबासँ बेसी
किछु नै.....।
पछोड़ धयने संस्कारक दुर्गन्धि
माथकेँ नचबैत
हमर सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ प्रभावित कऽ देने अछि-
आ हम ओहि दुर्गन्धिक एकटा हिस्सा
बनिकऽ रहि गेल छी।
हम जनै छी-
एतय एहि दुर्गन्धिकेँ मारवा लेल

लोक पिबैत अछि दारू, सोटैत अछि सिकरेट
आ करैत अछि परकियाकं संगति-
आ प्रत्येक मृत्युमे-
जीवनक आधार खोजि लेबाक
पालैत अछि भ्रम!
मुदा हम....
अपन गन्हाइत परिवेशकेँ
अपन व्यक्तित्वमे आत्मसात् कऽ लेबाक
करैत रहलहुँ अछि प्रयत्न,
हम ओकरा अपन व्यक्तित्वक अंग बना लेलहुँ अछि-
अथवा स्वयं बनि गेलहुँ अछि दुर्गन्धि!
जीवाक समानताक एहि युगमे
असमान जीवन जीबाक ककरो व्यथाक
लेखा-जोखा केलकैक अछि केओ?
जीवाक हकक विकृत कार्यान्वयन पर
चिचियेलैक अछि केओ!
केओ सुखक अथाह सागर लेने ढहनाइत-टीसैत
तँ केओ एक चुरू पानि ले' बेहाल-दम मारैत
एक घोँट पानिए लेल बेर-बेर मरैत-जिबैत मनःस्थिति
प्रतिक्षण आगाँसँ गुजरैत समुद्रक सामिप्यसँ
आर तीक्ख भऽ जाइछ
तखन एक चुरू पानिमे डूबि मरबाक होइछ मन।
से एत....।
बेर-बेर मरैत-जिबैत मानसिकताक कष्ट
आ समानताक दर्द सहबासँ नीक
हमरा चाही हमर अपन गाम
जतय एक्कहि बेर लोक जिबैत अछि
एक्कहि बेर मरैत अछि।
आ दुनियांक गहिंरगर बातक व्यामोहमे नहि पड़ि
निठ्ठ देहाती भऽ रहबाक समानता धरि पओने अछि।
✦

झमटगर गाछक कौआ

बड़ी दूर कतौ एकटा गाछक फुनगी पर
बैसल कारी कौआ
अनेरे हमरा मुँह दूसि रहल अछि
'लेलेँ किने, रोजी आ रोटीक विश्वास
बड़ जोतने रहे बाधा आ आन्दोलनक हर,
बड़ गओने रहए
अपन अस्तित्व ओ पहिचानक राग,
एहि अपन अस्मिताक रक्षार्थ
चारि दर्जन सपूतक बलिदानो
की देलकौ! उएह सरकारी खैरात
पेट भरि अन्नक बदला
पतौरामे फेकल शोषण आ विभेदक
अईंठ? नेरायल भोजक किछु अंश!
बड़ आश लगौने रहौक पीड़ित-शोषित
लोक, माय-बाप, भाइ-बहिन, धीया-पूता
अओतै ग' हमरा सभक राज,
पओतै ग' हमरा सभक समांग
सिंहदरवारमे घुमौआ खुरसी, अपना राजमे
अपने भागक निर्धारण करते ग'
एकावन प्रतिशत भू-भागक जनता!
की भेटलौ,
देख हम एहिना, तोरा सभक आँखिक सोझाँ
पुरखाक रोपल एहि झमटगर गाछ पर

अदौसँ बैसल
खुशफैल जिनगी जी रहल छी।
ने जरके झंझट ने जमीनकेँ,
ने शानकेँ ने पहिचानके,
ने खुशीमे कोनो बाधा
ने पेटके कोनो बदहजमीक रोग!
वस, एहि हरियर कंचन गाछ पर
मस्ती मारैत तोरा सभकेँ लोल
आ मुरूखपन्नीकेँ देखैत
हँसैत रहै छी!
एहि गाछक डारि-पातमे
बड्ड शक्ति छै, मोह छै, सम्मोहन छैक
एक बेर फेरसँ एकर छाहरिमे
एकर पात आ डारिक आशामे
आबिकऽ देखही!
सभ किछु भेटतौ-
खुरसी, गद्दी, महल,
वेंक वैलेन्स, नाम आ शान सेहो।
वस, एकटा वस्तुक कमी रहि जएतौ
तोहर पहिचान, अपन प्रदेश आ
स्वाभिमानक जिनगी!
आब तोहर खुशी छौ
हमरा संगे एहि गाछके पकड़वे वा
एक मुट्ठी स्वाभिमानक हेतु,
एहिना बताह बनल रहबे!



स्पर्श

अहाँ अयलहुँ आ
हमरा छुवि कऽ
कतहु चलि गेलहुँ
एखनो धरि सौसे देहमे
सिरहन भऽ रहल अछि।
मन औना रहल अछि
चारूकात दृष्टिपात करितो
कतौ अहाँक काया
नहि देखि पड़ैत अछि
मुदा, ई सांच थिक
अहाँ अयलहुँ आ
हमरा छुबिकऽ कतहु चलिगेलहुँ।
अहाँक स्पर्श हम
नीक जकाँ चिन्हैत छी।
अहाँक देहक गन्धो हमरा
बैचेन कए रहल-ए,
हवाक एकटा सर्द झोंकाक संग
कोनो आत्मिक ओ स्पर्श
जे हमरा वताह बना दैत अछि
विचलित कऽ दैत अछि
से नीक जकाँ हम महसूश कएने रही,
तएँ हमरा लगैए
अहाँ अयलहुँ आ
हमरा छुबिकऽ
कतहु चलि गेलहुँ।
अहाँक स्पर्शमे

आमंत्रण होइत अछि
भोगबाक सुखद नोत रहैत अछि।
अहाँक संग विताओल
प्रत्येक मंगल क्षणक
पुनरावृत्तिक सार होइत अछि
देहमे स्फुरण होइत अछि
झनझनी होइत अछि।
से पुरबा हवाक सिहकी संगे
हमरा सम्पूर्ण रुपेँ आत्मसात्कऽ लेने अछि
हम अहाँक उपस्थितिक
बोध करए लागल छी।
ताहुसँ हमरा लगैए
अहाँ अयलहु आ
हमरा छुबिकऽ
कतहु चल गेलहुँ।
मुदा, अहाँ अबितहु आ
हमरा सोझाँ, लगमे, सांसक महक धरिमे
अभरि नहि पौलहुं
इहो कोना भऽ सकैछ।
सत्य तँ ई अछि प्रिय
अहाँ हवाक झोंकाक संग
एकटा स्मृति बनि अयलहुँ
हमर मोनकेँ छुबि
चंचल हवाक संग कतहु बिलागेलहुँ
हम अहाँक स्पर्शक अनुभूतिक संग
बताह जकाँ स्वयकेँ नोचैत रहलहुँ।
आ बेर-बेर चित्त बुझबैत रहलहुं—
जे अहाँ अएलहुँ आ
हमरा छुबि कतहु चल गेलहुँ!



प्रतीक्षा अछि कोनो कृष्णक!

आइ हम अपना आगाँ पसरल,
विशाल रणभूमिमे ठाढ़
अर्जुन जकाँ अपन गाण्डिवक
महत्ता बिसरि गेल छी,
दुंदुभी, नगाड़ा आ घोडाक टापक
खनखनीक संग लड़बा-भिड़बाले वढ़ैत
काल्हुक अपन मित्र, परिजन-
किंवा आत्मीय सभक हेज
सहजहिँ हमर हाथकेँ शिथिल कऽ देने अछि।
कुन्द कऽ देने अछि हमर मस्तिष्ककेँ!
आ फेर एकबेर हम अपन सामर्थ्यपर
लज्जित भऽ जाइत छी!
गत वीस वर्षसँ आनक लाओल-
बेगारी दाना खएबाक हिस्सक।
हमर समस्त संघर्ष चेतनाकेँ
अपाहिज कऽ देने अछि,
लगैए हमरा भीतरक कमजोर आत्मबल
अपन-अपनैतीक घेरामे
स्वयंकेँ ओझरा-
लड़ाइसँ विमुख होएबाक बहाना खोजि रहल अछि।
बन्धु, अन्यथा नहि लेब-

हम ठीके भोतिआ रहल छी,
एहि दुर्योधन सभक हँजमे
हमरा प्रतिक्षा अछि कोनो कृष्णक
जे हमरामे दबल जाइत आत्मबलकेँ जगाबय-
शिथिल भेल जाइत कर्म-भुजाकेँ
गाण्डिव उठएबाक सामर्थ्य प्रदान कऽ सकय!!



कविता : आजुक सन्दर्भमे

भाइ, की लिखू कविता ?
एखन त' एम्हर पड़ि गेल छै अकाल
सौंसे चौरी-चांचर जरि रहल छैक
पानि लोकक इमान जकाँ सुखा गेल छैक
काते-कात निकलि जाइत छैक मेघ
मतलबी मीत जकां!
एहने बेरमे लोक गाम आ शहरक फर्क
महशुस करैत अछि/तखन एत्त' लाल-लाल ठोर रंगने
माउगि सभकेँ छमकैत देखि
पयरमे पहिरल टायरबला चप्पलसँ
लोल फोड़ि देबाक मोन करैत अछि-
जाहिसँ ठोरक संगहि सौंसे देह
लल्हौन भऽ जाइक!
नवका सूट आ नवीन प्रीन्टक साड़ी पहिरने
लोकक देहक नूआ के/चीरी-चीरी क' फाड़ि लुटा देबाक
होइछ इच्छा/जकर टुकड़ा पाबि
कतेको बेनग्नक इजत झपा सकैत छैक।
विदेशी सेंटक झोंका मारैत जोड़ीक देह पर
बगल मे गन्हाइत नालाक पानि उझलि
देवाक होइछ मोन-
जाहिसँ गन्ध मे जिवैत लोकक मर्मकेँ

बूझि सकैक!
वड़का आन-वान बला होटलक
आरामदायी मेजपर मुर्गीक हड्डी चीबबैत
लोकक आगाँसँ थारी फेकि देबाक मोन
करैत अछि/जाहिसँ भुखे पेटमे मरोड़ देत
लोकक व्यथा ओ अनुभव क' सकय....
मुदा, से बुझाइत अछि मात्र भाइ!
ई हमर कमजोरी कही वा मजबूरी/हम किछु ने क' सकब
पेटमे जुन्ना वन्हने वकर-बकर तकैत रहि जायब
एहनमे अहीँ कही-की कविता लिखा सकैत छैक!!



दीआवाती : नव सन्दर्भ

हमर पुरखा लोकनि
विराट अन्हारसँ लड़बाक हेतु
अथवा मोनमे पैसल अन्हरियाक भयकेँ
दबएबाक लेल माटिक दीआ आ दिऔरी
बनबैत छलाह, घर-आंगनमे सजबैत छलाह
आ ओकर प्रकाशक मद्धिम घेरामे छटपटाइत
कीरा फतिगाकेँ देखि
अन्हरिया भगएबाक भ्रम पोसैत छलाह।
तहिया तकर विकल्पो नहि छल,
सन्ठीक हुक्का लोली
गोसाँई घरसँ घर -आंगन दरबज्जा होइत
आलुक खेत धरिमे नचा कऽ
दरिद्राकेँ भगएबाक उपक्रम
एकटा अजोध हथियार रहैक,
तकर प्रयोग परम्पराकेँ मात्र निर्वाह नहि
लक्ष्मीकेँ स्वागत करबाक प्रक्रिया रहैक।
आंगनसँ पीठारक पद चिन्ह बना
गोंसाइ घर धरि लऽ जएबाक रीति
महज लौल नहि रहैक,
अन्न, धन, लक्ष्मीक आह्वान रहैक।
तहिया एहिस आन निस्सन उपाय

दोसर रहबो कहाँ करैक।
सम्भवतः तेहने सहज भाव बोधक
उपक्रम लक्ष्मीकेँ मोहित करनि
आ ओ आएबामे कोताही नहि करथि!
आब ......आब तँ आगमन आ विदाइ
दुनू भऽ गेलैए महग।
दरिद्रा भगएबाले
बढ़का बढ़का अनुष्ठान, पूजा पाठ
पहिरन -ओढ़न, गर गहना,
चाउरक पीठारक आगाँ इनामेल पेंटक चमत्कार
सभतरि उमंग।
लक्ष्मी आगमनले'
झक झक करैत चाइनिज बत्तीक झालर
कोनो कोनटामे हकन्न कनैत दीआकेँ
लुलुअबैत स्वागतक तैयारीमे जुटल अछि।
आब तँ अन्हरिया महज शिकार भऽ गेल अछि,
बढ़का बढ़का भेपर लैम्प, लीड लैम्प
चक चक सिफल बल
अपन तिक्षण इजोतक नोकपर
नचा रहल अछि कारी खटखट अन्हारकेँ।
त्रहि माम मचल अछि ओम्हर!
फटक्का, फुलझड़ी, अनार आ बम फटक्का
करियाक भयकेँ छहोछित कऽ रहल अछि,
लोक दीआवातीक नवरुप आ शक्तिकेँ
सलाम करैत अछि, गर्व करैत अछि।
दीआवातीक खुसी तहियो कम नहि रहैक
जहिआ खालीस अन्हारेटा रहैक,
दीऔरी तँ मात्र प्रेरणा दैक,
अन्हारक विरुिद्ध लड़बाक लेल।
खुशी एखनो दैत छैक-

अन्हरियाक साम्राज्यकेँ हटएबाक हेतु
अपनोकेँ गर्तमे मिला इजोतक सङोर करबाक खुशी।
एकटा आर फरक रहैक खुशीक
पहिने लक्ष्मी अनबाक हेतु
एक्केटा सहज बाट रहैक, परम्परागत!
सभ घरमे आबथि लक्ष्मी-दीआक टिमटिमाइत इजोतक संग,
आब तँ इजोतक प्रतिस्पर्धामे
अलमला जाइत छथि लक्ष्मी-
दीऔरीक प्रकाश पछुआ जाइछ,
धोन्हिआएल बाट, दूधिआ बाटक आगाँ
पस्त भऽ जाइत अछि।
मुदा दीआबातीक उल्लास
नहि होइछ पस्त,
ओ चाहे दुधिआ इजोतक आंगन हो
अथवा दीआक लौमे झिलमिलाइत् दरबज्जा हो।
आनन्द तँ एक्के रंगक होइछ ने।।



✦

नवका साल प्रति

हमरा बूझाइए--
ई नवका साल फेर,
हमरा लेल किछु नव नै क' सकत!
गामसँ शहर धरिक
यंत्रणापूर्ण वाटमे घूरिआइत
विसरि गेल अपन सर-सम्बन्धी,
असंपृक्त भऽ गेल अपन बाल-बच्चा!
एतेक धरि जे
पूर्ण जिनगी जीवाक दावा कएनिहार ठाममे
स्वयं हमर पत्नी भऽ गेलीह अनचिन्हार!!
आ एतेक उहापोह-
मानसिकताक दर्द उघैत हमर चेतनाकेँ
फेर एहु बेर कोनो ठाम नै धरा सकल,
नहि चिन्हा सकल अपन-पराड़, नीक, बेजाय
नहि मेटा सकल गामसँ शहर धरिक दूरीक थकान!
इहो साल फेर गड़बड़े बुझाइत अछि!
बरू--
खण्ड-खण्डमे छिड़ियाएल
रागात्मक क्षणक कोनो स्थीर चित्र
बनबासँ पूर्वे

छहोछिह भऽ जएबाक हादसा
इएह साल देखौलक अछि!
हमरा लगैए ठीके
ई नवका साल,
जे नै हयबाक चाही से क' गेल--
जे हएबाक चाही तकर--
लभलेसो नै रह' देलक--
ई फेर हमरा लेल किछु नै क' सकल!!



स्वीकृति : एकटा सत्यक

कोना घूमा सकैछी आब-
आगाँ बढ़ि चुकल बयसकेँ।
एक्कैसम शदी दिश बढ़ैत
दुनियांक ई रफ्तार
हमरा कतेक पछुआ देलक अछि।
दशकों पाछाँक परिवेशमे
अपन चारूकात बुनल जालीकेँ तोड़ैत
अपस्यांत निरीह-अनचिन्हार युवकक कथा
मोनमे हीनग्रन्थिक सृष्टि करैत अछि,
स्वयं अपूर्णताक बोध करबैत अछि।
स्टेशनक एकटा होटलमे
नेहोरा-विनतीकऽ
पाइक अभावमे अपन बेटाकें
हाफ प्लेट भात खुअबैत आ
एकटक निहारैत
कए दिनक भुखलि माय!
टीसनक ओइपार ऐलानी जमीनमे
प्लास्टिकक खोलीमे रहैत
रहमानक जोड़ीक खुशफैल जिनगी दर्शन
हमर मोनक तरमे जतायल दर्दकेँ
सेरा नै सकैए!

लगैए - दुनियांक समस्त वास्तविकता
एकटा धोखा थिक -एकटा भ्रम थिक,
सत्य त' ओ अछि जे हम देखैछी - आ जे
आंखिकेँ तृप्ति करैए- मोनकेँ हरिया दैए,
जकरा पयबाले आई कयबर्षसँ
रने-बने बौआ रहल छी!
मुदा, सत्यक हमर अन्वेषण
हमरा एहन ठाम ठाढ़ क' देने अछि
जतसँ समयकेँ पकड़ब आब दुस्साहस बूझाइए,
तहिना पलटिक' दू दशक पाछां जाएब असंभव।
तखन?
तखन - मीत ??
आब के पतिआओत हमर दर्द
तिलकि चुकल केसक ब्यथा।
अहाँ त' हमर सपनाकेँ घुरएबाक बचन देने रही!
की हम मानिली दुनियाँक समस्त वास्तविकता
सत्य थिक—
धोखा थिक तँ हमर दर्शन - हमर सत्य
किम्बा हमर विश्वास!!



आब देखार भेल अछि सभटा भओ

कतेक जतनसँ मुनने
भ्रमाह सुखक क्षण लोकमे बँटैत
अहाँक सानिध्य लाभ
हमरो कोनो कम
नहि कएने छल आह्लादित!
हम कनेक समयक लेल
अहाँक समर्पण किंवा
सान्निध्यकेँ अपन मुक्तिक
साधना बूझि
सभ किछु बीसरि अन्हरा गेल रही।
दहाइत फूलकेँ
दुनू तरहत्थीसं छानि
पूजा घर मे सजएबाक हमर
गलती, आब बूझबामे
आएल अछि।
नहि, हम त फूले जकां
भसिआ गेल रही
मौलायल, मचुरल फूलकेँ
पूजाक फूल बूझि लेने रही,
आव असल रंग निखरलैए
ओहि पर,

कएक हाथ सँ होइत
घरमे सजएबाक उपक्रम
वस्तुक गुणवत्ताकेँ
ओहुना कमजोर कऽ दैछ
उधारि दैछ ओकर
सभ मूनल भओ केँ।
जाहिमे भ्रमोवश प्रवेश करब
अपन अस्तित्व लोप करब होइछ,
मोन पारु-
मंदिरक परिवेशसँ सम्पर्क
आ मन्दिरकेँ साक्षी राखि
जूड़बाक संकल्प,
कतेक बइमानी लगैत अछि।
सिउंथ आ पेटक नाम पर
बड़-बड़ खेला भेल करैत अछि।
अहाँ एहिसँ फूट छी
नहि बूझबामे अबैत अछि आब,
बस, उमेरक एहि मोड़ पर
नहि बर्दाश्त भऽ सकैछ धोखा
समटु हे, हमर आत्मिए
अपन भओ सभकेँ,
ओहिमे समा अपन अस्तित्व
विलिन करबाक नहि अछि।
कोनो चाह बांकी आब।



मारुक क्षणक दस्तावेज

ई अन्हेर किए होइत रहलए
हमरे संग,
जिन्दगीक कतेको रूमानी क्षण
मोनक कोनो कोणमे
नुकायल लिप्साक धधराकेँ
शांत करवाक दैत अवसर
किएने सम्हारि सकलहुँ अछि-
'तोँ कि हम', 'हम कि तोँ' क
ताका-ताकीमे
एहिना कएक बेर निकलि गेल अछि
लुच्चा समय,
मोनमे बैसल संस्कारक इजोत
झाँपि दैछ सभ इच्छा आ भोगक
सहज अन्हरियाकेँ-
आ अपन भूत, वर्तमान आ भविष्यक
परिकल्पनाक अढ़मे
हमर कुण्ठित मोन
हमरा आर सुड्डाह होयबा लेल
छोड़ि दैत अछि-
धधरा ओहिना धधक' लगैत अछि;
नीके छल-

कएक वर्ष पूर्व जखन हम
ओहि मूर्तिमे अपना लेल
किछु खोजबाक अनायास
कएने रही प्रयत्न त'
एकटा विरड़ो उठल रहए-
आ अपन भाभटिमे ल' उड़ल रहए
हमर सभ आशा, आकांक्षाक पात सभ,
हम ओहिना पतझड़क पीड़ा
लदने वर्षहुँसँ-
अपन भाग्यक 'न्याय' पर
सजाय भोगैत रहलहुँ अछि।
आइ फेर जखन उएह मारुक क्षणक
होइत अछि सामना-
क्षण, पल आ घंटाक घंटा
अपन सान्निध्य सुखक खोरनाठीसँ
धधका दैत अछि आगि
आ चुपचाप बैसल
हमर छटपटाइत मोनक उच्छवासकेँ
अपन पैघ-पैघ आंखि दऽ कऽ
पीबैत निर्दयी हमर अनभुआर प्रिया
कतेक निर्दोष जकां
हमरासँ विदा मंगैत अछि-
आ हम किछु घणटाक हेतु
आग्रहक सिवा आर
कहाँ किछु कहि पबैत छी!
नहि, ई कोन जंजालमे
फेरसँ हम फँसि रहल छी-
जाहि समस्त स्मृतिकेँ
अपन एलबममे सैंति कऽ
स्वयंकेँ हेरा लेने छलहुँ

आ किरिया खा लेने रही-
नहि, आब नहि!
नहि अछि लूरि हमर अपन
जिनगीक सत्यके ँ जीबाक-
ने अछि ककरो
समर्पण आ प्रेमके ँ
जोगाकऽ राखि सकबाक क्षमता।
तखन किए' पड़ी एहि लफड़ामे-
जान-अनजान!
से ई दोसर बेर हमरा
झकझोड़ि देलक अछि-
सांझक ई इजोरिया
वर्षहुसँ गह पकड़ने
हमर अन्तःकरणक समस्त,
अन्हारके ँ, बिजलौका जकाँ
जाहिना प्रकाशित कऽ देलकैक अछि-
तहिना हमर सभ प्रण, दृढ़ता
आ, संकल्पक बान्ह
तहस-नहस भऽ भहरि गेल अछि,
मुदा, ई हमर सोचटा भऽ सकैछ एखन
हमरा लगैत अछि
हमरा भितरक धधराक ताप
मात्र हमराटाके ँ सेदि रहल अछि,
ओइपार तकर नहि छै
कोनो प्रतिक्रिया, अथवा आँखिक
गहीँर समुद्रमे
उठैत ज्वार-भाटा गनबाक
हमरा लुरिए ने अछि!!
✦

पहाड़क चोटीपर अन्तर सम्वादक एकटा क्षण

ओ एत्त नहि छथि!
'त' नहि छथि, एँहिमे की भेलैक?'
नहि लगैए जे ओ ठीके नहि छथि?
'ई तऽ सत्य थिक जे ओ एत्त नहि छथि!'
मुदा हुनक नहि हयब किए हमरा खलैए?
'कोनो बस्तुक जरूरति हयत!'
भऽ सकैए, हुनकासँ किछु चाही हमरा।
'सेतऽ आनोसँ लेल जा सकैछ ने!'
'नहि, नहि, ई नहि भऽ सकैछ। हमर चाह एतेक सहज कहाँ
जे जत्त कतौ भेटि जाइक।
'एहन कोन वस्तु अछि जे हुनकेसँ
मात्र भेटत अहाँके?'
आह, अहां नहि बूझि सकितहुं!
'बुझएलो पर नहि?
प्रायः नहि, एतेक रुक्ख मन-
बुझि नहि सकत, राग-विरागक कथा-मर्म।
नहि पकड़ि सकत-ककरो अनुपस्थितिमे
करेजक भितरसँ उठैत आहक तरंग;
आइ एतेक ठाम चकमक करैत शहरक प्रत्येक बत्ती
जेना डिबिआ जकाँ टिमटिमा रहल हो,
जाहिमे भोतिआ गेल होइक ककरो मीत

घरमे राखल कागतक अम्बारमे जेना
हेरा गेल हो सद्यः लिखित कोनो प्रिय 'रचना'!
हम त आइ अपने गढ़ल खोहमे बन्न
एक मुट्ठी ईजोतक प्रतिक्षामे अहुरिया कटैछी
बन्दी भऽ कऽ रहिगेल छी ककरो अनुरागक।
''ओह, आवतँ किछु-किछु हमहुं बुझ लागल छिऐ''
साँच बात तऽ ई छैक
कहियो पाथरो एहिबातकेँ बुझि
पघलि जाइत रहै।
सिनेह धूनक खातिर चतुर मृग
बेर-बेर अपन परान वलि चढ़बैत रहल अछि।
'लगैए हमहुँ आब बुझ' लागल छी'
नहिं, नहि, सावधान! लग जा कऽ
छुटवाक दर्द बड़ कटाह होइछ, मारुक होइछ
एहि बातकेँ खियाल राखब जरूरी!
ने ई बिनु लगौने परकार, ने ई छोरौने परकार!
गोंधिआं, अपनेसँ अपन जहलक निर्माण नहि करु
नहि खुनू खाधि अपन चारूकात!
'तखन अहाँ किए... ....?'
फेर उएह गप! हमर बात छोडू ने।
हम त' चहरि गेलछी, खड़े-खड़े पहाड़क चोटीपर
जत्तसँ आगाँ आ पाछाँ जएवाक वाट
बड़ दुरूह भऽ गेल छै'।
आ बन्धु! कतौ एना जखन लगन जुड़ैछै
लोक उपरसँ आगाँ वा पाछाँक बाट
बीसरि जाइत अछि,
तएँ नितान्त निर्जन पहाड़क चोटी पर
संघतियाक अभावमे
एकाकी पीड़ा भोगैत
हम अपने बनाओल छहरदेबालीक मध्य
चकभाउर दऽ रहल छी।
से, सुनु हे हमर आत्मीय सहचर!
करेजमे कनीकटा अन्तरसुखक स्फुलिंगक
अनुभूति पएबा लेल - जान-अनजान मे
जाहि बाट पर हम चलि चुकल छी
तकर अपने हिसाब-किताब छै'
नियम-कानून छै,
अहाँ एहिमे ओझरएबाक जोखिम
किए उठब' चाहैंछी?
'नहि, आब तऽ हमरो एहि जोखिम दिस
बढ़बाक मोन होब' लागल अछि
भितर धरि किछु महसूस कर लगाल अछि
लगैए किछु हमरो तानि रहल अछि
हे, माफ करिह'-आब हमहीँ घिचाएल
जा रहलछी-ओम्हरे, पता नहि केम्हर!'
जाह, तहुँ सूलीपर लटकबाक नियार
कइए लेने छह तऽ!
लगइए-अपन प्राणान्त देखबासँ पूर्व
तोरा लेल शोक प्रस्तावक चेष्टा
करहि पड़त हमरा;
गोंधिआं-तोहर अनुपस्थिति आर खलत
कमसं कम एहि दमघोंटू वातावरणमे
तोहर निर्दोष अनुहारसँ सन्तोष होइत छल।
आब तऽ अपने पीड़ासँ क्लान्त
ककरो लेल प्रतिक्षित क्षण-प्रतिक्षण मर्माहत्
स्वयंकेँ आकृति, हमरा आर डेरबैत रहत,
आ ई पहाड़क एकान्त-भयावह चोटी
आर उच्च होइत जायत!
✦

हा, नियति!

जिनगीक वितैत प्रत्येक क्षणक
इतिहास लिखैवला हे नियति!
वताउ, की वितल हमर एकोक्षण एहन नै-
जकरा कहि सकी हम अप्पन?
अपन जीवनक बुट्टी-बुट्टी मांसु चढ़ा
साधनाक तान्त्रिक सिद्धिक क्रममे-
की रहि गेल कोनो भरिगर त्रुटि?
जे प्राप्तिसँ पूर्वे-
अनुष्ठान भङ्ग भऽ गेल अछि!
हमर सपनाक प्रत्येक पूर्णविराम-
कौमामे बदलैत चल गेल,
आ हम आगाँक हरफ जोड़बा लेल
ओहिना रहि गेलहुँ बौआइत !
मुदा... आब?
आब तँ सभ समाप्त भऽ गेल अछि।
लेखनीक मसि गेल अछि सूखि,
आ सुखि गेल अछि प्रेरणाक अजस्र स्रोत!
के अछि एत्तसँ दूर...
हमर प्रतिक्षामे बैसल-
जकर स्मृति मात्रमे

मोनमे उठल कोनो आरोह-अवरोहमे शांति भेटि सकैछ!
हम आइ सांचे टूटि गेल छी !
एहि सांसारिक समुद्र वीच उबजुबाइत-
अभागल कोनो 'यात्री'के
किन्हेरक इजोत बनि जिनगी देनिहारि
आइ स्वयं दिशा वदलि चुकल अछि-
आ हम पुनः किन्हेरसँ समुद्रमे-
उवजुवएवा लेल वाध्य भए गेल छी!!



खण्ड : दू

वटवृक्षक सुखायल काया आ हम

आहि रे बा,
देखिते-देखिते कोना सुखा गेलै ई
बरक गाछ।
लोक तऽ कहैत रहय
एकर उमेर तऽ पाँच सय वर्षसँ कम नहि छल हयतैक
ई आर कतेक दिन बांचत, कहि नहि।
जे गाछ पाँच सय वर्ष छाहरि दऽ
पथिककेँ तृप्ति दैत रहय,
जकर छायासँ मानसिक सन्ताप
आवेशक ठेही सहजहिँ भागि जाइत रहैक
से गाछ तखने सुखा गेल
जखन हम यात्रामे रही
आ हमरा ओहि धनगर गाछक छाहरि
आ निःसृत शीतलताक स्फूर्तिक
सभसँ बेसी जरूरति अछि।
हम तऽ अकबक, ओइ सुखल, निस्तेज,
ब्रह्मलीन गाछक भौतिक कायाक आगाँ
नतमस्तक भऽ अपन भाग्य पर
स्वयंकेँ दुतकारैत-आहत पड़ल छी।
काल्हिएक बात छै-

जखइ ओहि गाछक नीचां
किछुए कालक हेतु बिलमबाक भेटल रहय मौका
तऽ गाछक लता जकां नमरल हाथसँ
कोना हमर माथके थपथपौने रहय,
आशीर्वाद आ स्नेहक अनुभूति प्राप्त करब
हमरा लेल अद्‌भूत अनुभव छल
से गाछ आइ सुखा गेल अछि।
जाहि धरतीसँ आयल छल
ताहिमे लीन भऽ गेल अछि,
छोड़ि गेल अछि तऽ हरियरी
आ छाया बँटबाक गुण,
अपन सिहकीसँ पोर-पोर उद्वेलित
कऽ देबाक ओजस्विता!
हम तऽ अकबक, ओइ ब्रह्मलीन वटवृक्षक आगाँ
नतमस्तक भेल ठाढ़ छी-
हे वटवृक्ष, हे यात्री
हमर शत-शत नमन्।।



प्रजातंत्र आ हम सभ!

आब हमरो ओत्त आबि गेल अछि प्रजातंत्र।
मुनिसीपलिटीक मुखिया आ गामक अध्यक्ष
दुनू हाथेँ लुट' लागल अछि रूपैआ,
काल्हितक रिक्शा रहैक आफत जाहि नेताकेँ
सांसद अथवा मंत्री बनिते
चढ़' लागल अछि विदेशी चरिपहिया!
लोक छोड़ने जा रहल नैतिकता आ प्रतिबद्धता
बनि गेल अर्थ आ अविश्वासक बहिया!
भाइ हमरो ओत्त आबि गेल अछि प्रजातंत्र।
सुनैत रही अहाँ ओत्त-
कतौ बोफोर्स तँ कतै चारा
कतौ मुर्गी तऽ कतौ पाड़ा
कतौ बिल्डर्स तऽ कतौ कमिशन
कतौ संरक्षण तऽ कतौ परमीशन
पचास वर्षक प्रजातंत्रक ई गुण सभ।

से जखन हमहुँ सभ-
महिला सांसदकेँ भेट'वला प्रसूतीक औषधि
पुरुष सांसदकेँ खाइत देखलहुँ,
रूपैयाक लोभेँ प्रतिबद्धता आ इमान बेचैत
एम्हर के ओम्हर आ ओम्हर के एम्हर
जाइत देखलहुँ,
कमीशनक नाम पर जहाजकेँ गिरैत
आ योजनाकेँ चटैत कर्मचारी आ नेता
दश वर्षक बाल प्रजातंत्रकेँ युवा बनएबा दिस
लागि पड़ल देखलहुँ,
तऽ लागल ठीके-
हमहुँ सभ आब प्रजातंत्रबादी होइत जा रहल छी।
प्रजातंत्रमे जहिना बजबाक आ लिखबाक होइछ
अधिकार-
तहिना देशकेँ लुटबाक होइछ जोगार!
पेटक गोलाइ आ असली प्रजातंत्रमे
बड़ अन्योन्याश्रित होइछ संबंध कहाँदन,
ई बात हमहुँ सभ बूझऽ लागल छी- आब!
तएँ लगैए हमरो ओत्त-
प्रजातंत्र हुड़कए लागल अछि
अपने पयरे उठि
नहुएँ-नहुएँ गुड़कय लागल अछि।
भ्रष्टाचार-शिष्टाचार
कमिशन-विकासक आधार,
मूट्ठी भरि धनिक भेल,
गरिबी बनल विकराल
जयदेश, जय जनता
जय भारत-जय नेपाल!!



वृद्धक सम्मानः एकटा दृश्य

हे, अएलौ बुढ़बा!
मार सार के, केना बाट दूरि करै छौ,
खधम्मर छौ, ने काम ने धाम,
हे- धम्म, धायं धड़ाम्
बाप रे! मारि देलक, आह!
हे भगवान!
हीं: हीं: हीं: हीं:-
बुढ़बा केना नखरा कयने है रौ,
ही, ही, ही ही!
ताबत ओहि बाटे अबै छै एकटा जुलूस
युवा-युवती आ प्रौढ़ सभक,
अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध वर्षक उपलक्ष्यमे
निकालल गेल ओहि जुलूसक पैघ बैनरमे
किछु गोट उठाकऽ टांसि लैछ
ओहि कुहरैत, अशोथकित बूढ़केँ-
जीवंत भऽ उठैछ अभियान
सरकारी, गैरसरकारी संस्थाक स्वयंसेवक
शहरक सड़कसँ लऽ
पँचसितारा होटलक वातानुकूलित हॉल धरि
बृद्ध वर्षक अवसर पर चिचिया उठैछ-
सम्मान दिऔ बूढ़केँ, बैसबियौ पांतीमे
नीचाँमे खसल हो त',
सटा लियौ छातीमे। (बैनरमे कहबामे लाज लगैत छैक)



अन्तराष्ट्रीय बृद्धवर्ष

पुरना चाउर पन्थ होइत हयतै कहियो
आब त टेरामाइसिनी युगमे
चाउरक उपयोग महज अक्षत किंवा
भोजक लेल होब' लागल अछि।
तएँ ने अपन भरल-पूरल परिवारकेँ गढ़बामे
जीवन बितौनिहार कोनो रीझन काका
सत्तरि वर्षक उमेरमे कोनो बृद्धाश्रममे पड़ल
अपन अतीतकेँ छातीपर लोटबैत
मृत्युक प्रतिक्षा कऽ रहल अछि।
आब त ओकरा छुटल जा रहल छैक मोह
जे आओत गऽ जेठका बेटा-
मृत्यु उपरान्त दागवत्ती दऽ करत गऽ उद्धार!
ओत एही बृद्धाश्रमकेँ करिंदामे
अपन मुक्तिदाताक अनुहार
कयक वर्षसँ ठेकनियाँ रहल अछि।
आजुक आधुनिकता, प्रविधिक संगतिमे
ओकर सन्तान—
कम्प्यूटरक पर्दा पर खोज' लागल हयत
अपन बाप-मायक अनुहार,
कर' लागल हयत भाइ-बहिन
कर-कुटुम्बक सम्बन्धक लेखा-जोखा।

मनुक्खक सभ सम्वेदना
फ्लापीमे कैद भऽकऽ रहि गेल अछि।
आ एहिना कोनो रीझन काका
वृद्धाआश्रमक कोनो एकांत अन्हार कोनमे
अपन अतीत आ वर्तमानकेँ
तौलैत, मृत्युक प्रतिक्षा कऽ रहल होइछ।



उठाबऽ पड़त मशाल!

सिनेमाक पोस्टर टांगऽवला
छौड़ाक पाछाँ-पाछाँ दौगैत नेना सभक हेँज जकाँ
एकटा अदृश्य मोहक कारणेँ
हमहुँ सभ अपन नेताक पाछाँ-पाछाँ
पोस्टर देखबा लेऽ अपस्यांत रहै छी।
आगाँ पर्दा पर हेतै की
ने तकर जिज्ञासा रहैए, ने सामर्थ्य
खाली किछु पयबाक लेल खाली मोनकेँ
झूठोक व्यामोहसँ भरै छी।
तखन बेर-बेर ई चक्र एहिना
घुमैत रहैत अछि!
अपन जेबीक मजगूतीक खातिर
हमरा सभकें कटैत रहैत अछि।
कहाँ आबि सकल अछि कोनो बदलाव
कोनो क्रान्ति,
आर्थिक शोषण, भ्रष्टाचार आ भाषण
जीवन-पद्धति बनल जा रहल-से
कहाँ हटि सकल अछि ई भ्राँति।
की ठीके हम सभ अपाहिज जकाँ
टुकुर-टुकुर अपन अस्मिता लुटैत देखैत
रहि जायब?

प्रजातंत्र आ बहुमतक नाम पर
नङटे नचैत राजनीतिकेँ
फेरसँ जमीन पर लाब' पड़त
बुझायल जा रहल बदलावक जे मशाल अछि
तकरा फेरसँ जड़ाब' पड़त,
तखने भेटत पेट, तखने भेटत भाषा
तखने स्वाभिमान बांचत, आ बांचत आशा!



विकास-प्रेमी मैथिल

एकदिन किछु गोटे
एकटा झमटगर गाछ प' लुधकल
पाकल-पाकल आम तोड़ैत रहथि
कतबो झटहा फेंकथि
आम लग नहि पहुचन्हि
खिसियाकऽ आमक जड़ि
खोघैत रहथि।
संगक मित्र टोकैत छथि
'हे देखियौ' ई अजगूत!
साहस आ खतराक डरेँ
लोक केहन बहकि जाइत अछि,
गाछ प' चढ़ि आम तोड़ल जा सकैछ-
मुदा, आह!
आमसँ पहिने अपने 'टभकि' जाइत अछि!
मित्रक ई उक्ति सुनि हम कहैत छीयनि-
'आहिरे वा, देखे' नै छिऐ'-
केओ जड़ि खोधबामे बेहाल
केओ भटहा फेंकबामे अपस्यांत
तँ केओ गोलैसी करैत शिथिल छथि,
ई कोन अजगूत!
मैथिलीक विकास मे लागल
ई लोकनि विशुद्ध मैथिल छथि!



भूकम्प 2045

एह, सम्हारू नेनाकेँ, अनेरे पलंग हिलबैए,
अबेरकऽ सुतलहुँ, निन्नो कहाँ पुरलैए!
नहि, बच्चा तऽ केहन संचमंच पड़ल अछि-
मुदा, हिले धरि जरूर छै किछु,
पत्नीक बाजवसँ आश्वस्त होइछी।
लगैए आइ भोरेभोर गिरियाक ट्रेक्टर
गड़गड़ौने निन्न तोड़ि रहल-ए, बदमाश! पाजी!!
आ ई गोंगिआएब? सिकरेट फैक्ट्रीक सायरन तऽ नहि?
मुदा, एखन तँ अन्हरोखे छै, तँ की अछि ई?
ता पत्नी चिकरलीह-नै, नै, उठू-भागू,
ई तँ भूकम्प छिऐ'। नेनाकेँ पेंजिअबैत-
बौआ रे बौआ उठ, चल बाहर,
तोड़ निन्न, जागू!
हम एक्केबेर धड़फड़ा कऽ बिछाओनसँ उठि
बैठकमे जा छिटकिली हथोड़ै छी,
पत्नी चिचिआइ छथि-ओम्हर कत्तऽ
दरबाजा तँ बाहरसँ बन्न अछि
भागू एहि बाटे, की मुँह तकै छी?
पूर्व मुहंक कोठरीक बिलैया खोलेत
दुइए छड़पानमे सड़क पर चलि अबैछी!
ओही दिन पहिल बेर पत्नी बुधिआरि लगैत रहय-

जखन सड़क पर अनघोल करैत-
बदहवास लोकक भीड़
मकानक झूलब स्वयं देखैत रहय।
बिजलीक खम्भा-
बाँसक छीप जकाँ लचकैत रहय।
तऽ एकरे कहै छै भूकम्प?
सुनने तऽ रहिऐ। नव्वे सालक भूकम्पक मादे
बड़ प्रलयंकारी भेल रहैक ओ,
मचा देने रहैक सभतरि हड़कम्प!
तऽ की एहिना भेल रहै ओहो भूकम्प?
मुदा, सत्य तँ ई अछि
भूकम्पक हमर तत्कालीन अनुभूति
ओतेक बेजाय नहि रहय,
हम पहिल बेर देखने रहिऐ
बड़को मकान हिलैत-
बिना हवोक झोंककेँ वातावरणक गोंगिआएब
सड़क थरथराइत, बिनु नशे-पानिकेँ
आदमीकेँ झूलैत!
आ सभ दिन सुरुज उगलाक बाद उठैबला
समयपूर्व करुआएल नेत्रसँ
पहिल बेर देखने रहिऐ दमसल भिनसरबा
डबडबायल क्षितिजीय लाली,
जेना किओ काँचे निन्नमे
पलंग के झकझोड़ि जगा देने होइक रातिकेँ!

✦



जान ने जाएत व्यर्थ-निरर्थक

अछि मिथिला आइ ज़ोहि रहल
नव संविधानकेर पांती
उघरल माथ कठुआ रहल जे
तकरा खोज छै गांती।
आइ ताकत चाही मैथिल रक्तमे
ल' सकए अप्पन अधिकार एत
परसल थारी घींचि रहल जे
हाथ मोड़ छीनि सकी जत्त।

नहि अछि आव दिन दूर बहुत
फूका चुकल विगुल रणभेरी
ककर बुत्ता छै क' देत बंचित
अपन राज सन्तान छै ढ़ेरी।
अड़तीस वीर मधेशी गमौलनि जे
जान, ने जाएत व्यर्थ, निरर्थक
निर्णायक आन्दोलन अछि सरिपहुँ
ललकारि रहल तीन करोड़क हाथ समर्थक!!



नेता उवाच

हे जनता
जय नेपाल
लाल सलाम
जय मातृभूमि
जय राष्ट्रवाद!
फेर हम सभ आयल छी
अहांक दरबज्जा पर
एकटा मत मांगऽ।
एहिस पूर्वो हमर काममे कोनो त्रुटि
अहाँ नहि हयब पकड़ने
जेना जतेक पाइ रहैक, बजेट रहैक
खर्चे भेल, नहि रखलहुँ जकड़ने
हँ, कामके मूल्यांकन लोक
कनेक देरीसँ करैत अछि
ताहिसँ पाँच वरिसमे एके बेर
हमरा सभक अनुहार
नजरि पर पडैत अछि।
बाट-घाट, पाइप, पानि
जे जतेक भेल, ग्रेभल, माटि
धयल गेल अछि,
पंचायतक तीस वर्षक विकास

इएह पांच वर्षमे
कयल गेल अछि।
अगामीयो पांच वर्षमे
जतेक बनि सकत करब,
एखन धरि भरल नहि जा सकल
जे खधिया सभ अछि भरब।
अहां विश्वस्त रहू
शिकायतक कोनो मौका नहि देब।
सभ किछु तय छै, नहि कोनो जिकिर
मात्र एकटा मत दिअ
आ पांच वर्षक हेतु
भऽ जाउ निफिकिर!



अन्हार हृदयस भगाओत

चीर रहल छौ छाती तोहर मायक, मुह तकैछे,
सोहदा बनल माथ पर धए हाथ किए झखैछे।
एखनो पंक्तिबद्ध भऽ, मैथिल परिभाषाकेँ बदलु,
जातिक शोषण कर्म बनएनहि आबो सभकेओ सम्हरु।
अपने खुनल खाधिमे गडल आन्हर भविष्य लगैए,
मैथिली थिक हमर भाषा ई भाव किएने जगैए।
जाधरि भाषा सूत्रमे ने बान्हव अधिकार कठिन अछि पाएब
अपने समाङसँ दुरी रखने एहिना दिन-दिन पछताएब।
ईर्ष्या, द्वेष, हिनता बोध विकराल शत्रु बनल अछि,
तेरह पाकमे लागल तिरहुतिया बाँकी आँगुर गनल अछि।
जएह बांकी छी सएह सपूत बनि-समय भूमिकेँ भरु,
कुरु सभामे चीरहर्ताकेँ मिलिकऽ छाती चीरु।
जय मैथिल जय मैथिली उदघोष गगनकेँ नचाओत
सत्य स्वरुपा माँ मैथिली अन्हार हृदयसँ भगाओत।



दीपमालाक इजोतमे

देशमे आन्हरक प्रतिशत निकालनिहार अध्येता लोकनि
प्रायः अपनाके सद्यः आंखिबला गनैत आएल अछि,
जे भऽ रहल छैक देखि नहि पड़ैछ
जकरा जरूरी छै नहि देखब
पहाड़के खोधि-खोधिकऽ
महज एकटा मूसाकेँ तकैत आएल अछि।
मत्स्य न्याय कहादन पूर्वोमे होइत छलैः -
ओ चाहे अभिमन्यूक संग भेल हो,
चाहे सूर्यसूत्र कर्णक संग,
मां मैथिलीयो तहिया न्याय नहि पौने छलीह।
तएँ ई अँखिगर काजक दावा कयनिहार
तहियो अपन ज्योतिकेँ न्यायक पलड़ा पर
तटस्थ रखबाक दृढ़ता नहि लौने छलाह।
एहन द्विविधा ग्रस्त समाजक आंखिपर
बान्हल स्वार्थक पट्टी
इजोतक अनुभूति कहां होब' देलकैक।
तएँ लोक आंखिए देखियोकऽ
तकरा अपना आगाँक सत्यकेँ
झूठ बनएबाक लेल अपस्याँत बनल रहैछ,
इएह अनदेखा करबाक उपक्रम
अन्हारमे रहबाक प्रमाण बनल अछि,

लोक देखियो कऽ आन्हर रहबाक संकल्प लेने
छाती फूलौने दम्भसँ तनल अछि।
ई भ्रमक खेतीसँ अन्हरियाक कालिमा नहि हयत कम,
नहि कमजोर पड़त यथार्थक करूआहटि।
तखन एहिना बरबस सालमे एकबेर
पूर्खा सभक सद्प्रयासे आओत ग एकटा पर्व
दिआबाती।
प्रकाश पर्व, लुकझुक इजोतक त्योहार,
चारूभर छिडिआएल डिबियाक प्रकाशमे
अपन भितरक अन्हारकेँ चिरबाक प्रत्येक प्रयास
निश्चय दैछ मोनमे नव शक्ति, स्वच्छता आ
जड़ि जमौने करिया भावकेँ नष्ट करबाक साहस।
दिआबातीक प्रत्येक टिमटिमाइत ई लौसँ उठल
इजोतक रेघा विराट अन्हारकेँ चिरबाक करैत प्रयत्न
मनुक्खकेँ मानव बनि रहबाक प्रेरणा दैछ,
सिखबैछ मानवीय मूल्यक बोध आ
इजोतमे रहबाक सुख।



हुनकहि लेल

पृथ्वी पर जखन अराजकता बढ़ैत छल
धर्म आ संस्कृतिपर होइत छल प्रहार-
जनताक त्राहि-त्राहिसँ आतंकित भुवन
ने कोनो शक्ति आने कोनो सरकार,
तखन पृथ्वीपर शांति आ सुव्यवस्थाक हेतु
भयाक्रांत अनुहारक सान्त्वनाक हेतु
धर्म आ संस्कृतिक संरक्षणक हेतु
भुवन पर अवतरित होइत छलाह
स्वयं भगवान।
आइ भौतिक प्रधान विश्वमे
अपनेमे समटायल जन विश्वास
गाण्डबधारीक सान्निध्यसँ स्वयकेँ विमुखकऽ
भले 'प्रगतिशील' अधुनातनबादी बनि जाओ,
शाँति, सुव्यवस्था आ उचित न्याय धरि खोजैत
स्वतन्त्रताक मूर्तिसँ हिमालयक गुफा धरि
अनेरे बौअएबापर बाध्य होइत रहल अछि।
विकासक गोलचक्करमे पड़ि स्वयं अशांत भऽ जाइछ!
बम-एटमबम, हाइड्रोजन बमक पछाति
अणु आ परमाणु धरिक जोगाड़सँ
विश्वमे तबाही लएबाक भले व्योंत क' लिअओ
मुदा वन्धु, इलेक्ट्रनिक, अणु-परमाणुक

हथियारसँ कहियो-कतौशांति लबैत देखलिऐक अछि?
तएँ ने विकासक चरमपर पहुंचल ओ देश सभ
अशांत अछि, छिछिआइत घूमैए
सौसे विश्वमे एक मुट्ठी अपनैती लेल!
आ एत्त इतिहासक दोहरायब लोक
बेर-बेर महशूस करैत आयल अछि,
राणाक क्रूर शासन होइक आकि
जनताक नामपर लूटि मचबैत चूनल सरकार,
देशमे गणतन्त्रक आगमन
की जनताक मलीन अनुहारकेँ
भय, त्रास, भ्रष्टाचार आ कृपाबादक
जंजालसँ मुक्ति दिअएबाक अहसास
नहि दिऔने रहय?
पंचायतकें अलोकतंत्री पद्धतिसँ
निर्वासित भोतिआएल लोक
की पुनः एहिमे खपबाक हेतु
देश घूरल नहि रहय?
लोकतंत्र त' एकटा एहन आदर्श थिक
जे समयक संग चलैत अछि।
की एकर उपस्थिति प्रजातांत्रिक स्वरूपक प्रतीक नहि?
कत गेल बिरोध, अविश्वास आ
अपना पाछां लाखों जनता लागल हयबाकभ्रम?
की इतर कहौनिहार बजुर्ग सभ
अपन भ्रमक स्वीकारोक्ति नहि कयलनि अछि?
सत्य तँ ई अछि वन्धु,
आइ जखन हथियारक होड़बाजी अछि
एकदोसराक सीमा छपटबाक भीड़न्त अछि
विभिन्न बादमे पड़ि आन्तरिक-कलह-
विकासक बाटक रोड़ा बनि जाइछ
तखन ओहन युगप्रवर्तक आकृतिक

औचित्य आर प्रबल भऽ जाइछ जे,
नेपाली जनताक माग्यकेँ
आन्तरिक विकासक गतिसँ जोड़बाक
करए महान ऐतिहासिक काज
जकरामे औकादि होइक!
देश मंगैत अछि न्याय!
पहिचान आ स्वाभिमान!
तकरा लेल चाही
गाण्डिबधारी परमात्माक
फेर एक बेर पुनर्जन्म
जकर स्वरूप
जनताक रक्षक आ सेवकक होइक मात्र!



अन्तर

कोनो कृष्णक गीता
रंगभूमिमे संघर्षक दैछ-उपदेश कोनो अर्जुनकेँ
तँ ओ महान् भए जाइछ, पूज्य भए जांइछ,
मुदा, कोनो बापक गीता
कर्मभूमिमे संघर्षक दैछ प्रेरणा, कोनो अशोथकितकेँ,
तँ ओ स्वयं उपहास्य भ' जाइछ, दयाक पात्री भ' जाइछ!
कोनो सत्त, जकरा पएबाले सहस्त्रहुँ वर्ष तपस्यामे-
देह विछालैछ कतेको अन्वेषक, साधक!
तँ ओ ईश्वरीय भए जाइछ, धर्म भए जाइछ
मुदा, कोनो आजुक सत (ते), जँ सामाजिक खाधिमे फँसि
देखबैछ समाजक घोन्हिआयल परिवेश-
तँ कोनो बापक कोनटामे पड़ल
सिसकबापर वाध्य भए जाइछ!
तहिआ आ आजुक ई अन्तर
विश्वक प्रगति नहि-अवनतिक द्योतक थीक वन्धु!
आ हम सभ एहि अवनतिक
गर्त्तमे-धंसल जा रहल छी क्रमवद्ध ढंगसँ!!



स्वागत नव वर्ष

आइ फेरसँ एकटा नवका कैलेण्डर
टंगा गेल अछि देबाल पर,
मने नया वर्ष आबि गेल अछि।
ई नयां वर्ष बुझबाक तरिको आब
कतेक नवीन भऽ गेल अछि;
अर्थात टेलिभिजनक पूर्व संध्यामे प्रसारित कार्यक्रम होइक
आकि देबालपर टंगाएल चटकदार कोनो कलेण्डर।
पहिने-
जूड़शितल, कादो, ईनारक उड़ाहब
आमक गाछक जड़िमे पानि पटएबाक क्रिया
आ सभसँ बढ़िकऽ एकचुरू पानिक संग
अपन माथपर मायक हाथक थपथपाहटिक सर्द अनुभूति
नव वर्षक आगमनक संकेत दैत छल।
सोहिजनक तरकारी आ आमक टिकुलाक स्वाद
सेहो आबि चुकल सालक
कथा कहैत छल।
आब तँ एहिसाल आ ओहि सालक भेदो
भऽ गेल अछि समाप्त।
बांकी नहि रहि सकल कोनो खुशी
ओ उत्साह, जे आनन्द दिआ सकैत
नयां वर्षक।

सभ एतेक सहज आ स्वभाविक भऽ गेल अछि
जेना आइ आ काल्हिक बितैत निकम्मा क्षण मात्र हो।
होटलमे भोजन, पिकनिक
आकि नाच-गानक संग खुशीक विज्ञापन,
एहु तरहे तँ नयाँ वर्षक होइछ स्वागत।
मुदा, अनेको संभावनासँ भरल
वितलाहा वर्षक कसौटी पर एखने कसब
नहि हयत बुद्धिमानी,
कलेण्डरक पहिल पन्नापर अंकित अंकक
अपन शक्ति छै; सामर्थ्य छैक।
आब चाही ओहि शक्ति-सामर्थ्यके ँ
उपभोग कऽ सकबाक क्षमता, कौशलता।
तएँ लाख मानसिक बिचलनक अछैतो-
नया वर्षक स्वागतक तैयारी तँ करही पड़त,
उठाबहि पड़त आनन्द- करही पड़त विश्वास
अपन शक्ति आ सामर्थ्यपर,
जे कॅलेण्डरक अंकक संग मिलि
एकटा नव इतिहास लिखबाक आधार तैयार कऽ सकय!
से हे नव वर्ष
स्वागत अछि, स्वागत अछि।



स्वागतम्- नव वर्ष

समयके आयब आ चलि जायब
नहि भेलैक कोनो बात।
जे सदैवसँ होइत रहल अछि
सएह होएब-ककरो हेतु की हयतैक समाचार,
आ तएँ आएल' 52, गेल 51
हमरा अहांक दुर्दिनसं घटि गेल
एकटा सौंस वर्ष अथति 3 सय 65 दिन।
नव वर्ष मनएबाक अपन ताल होइछ,
भोज-भात खान-पीन आ देखाउस तमाशा
मनके बहटारबाक नीक छै ई उपाय।
चलु एहु बहाने गत वर्षक देल पीड़ा
किछुओ त' कम भ' जाएत।
मनके भरमाओल जा सकैछ
"औजी, एहु बरख कहुँ तेहने दिन-राति।"
ई आशा आ भ्रमक संसारकेँ लदने
आवि गेल अछि नव वर्ष 2052,
महज 1 अंकक फेरसँ सगरो बदलि गेलै माहौल
मोनक भावना, सरकारी कामकाज
योजना कार्यक्रम,
माने नयां वर्षमे नव ढ़ंगसँ करबाक संकल्प
लैत अछि जन्म।

से कतेक दिन टिक पाओत ई जोश
कतेक दिनकेँ समेटि कऽ उपयोगी बना पाओत
लोक अपन बितैत क्षणकेँ,
से देखबाक अछि,
ताधरि जाधरि आर्थिक मारिमे सभ जोश
चरमरा ने जाइक, अपन आ आनक हेजमे
स्वयंकेँ खोजबाक प्रवृत्ति, थाकि ने जाइक,
मित्र आ दुश्मनकेँ चिन्हबाक प्रयास
लचरि ने जाइक, ओकरा कमजोर ने क' दैक।
तखन फेरसँ अगिला नयाँ वर्षक
बाट जोहत लोक—
एकटा फुसिक संसार गढ़बा लेल
योजना आ कार्यक्रम तय करबाक लेल
नव ढ़ंगसँ जिनगी शुरू करवा लेल।



आह मधेश, ओह मधेश

लड़बाक छैक बाध्यता
लड़ि रहल अछि मधेशी
जरि रहल अछि मधेश।
ई संघर्ष नहि छैक कोनो पद आ लिप्साक हेतु
छै अपन पहिचानक हेतु
राष्ट्रीयताक उतराचौरीमे
स्वयंके आ हुनक हेतु।
अपनाकेँ नम्बरी कहएबाकलेल
वर्पसहुसं लगलो
नहि छै कोनो शान,
दू-दू गोट आन्दोलनमे
दर्जनो सपूतकेँ गमएलोपर
पीढ़ियोक कहाँ छै मान।
आसन, सिंहासनपर बैसल
देशक भाग्यविधातालोकनि
एखनो मधेश आ मधेशीकेँ
बुझैत अछि बेमातर
आँगन-घरपर कब्जा जमौने अछि
निरसल छै छोड़ने, रौदी दाहडिसं मारल
उजाड, चौरी चाँचर।
नव्वे दिनक बन्दी, आन्दोलन

अस्तब्यस्त छै घर परिवेश
आह मधेश, ओह मधेश।
अढाइ सय वर्षक शोषण, उत्पीडन
छुवाछूत, भेद-भाव
सत्ता पर कब्जा
सम्पतिपर दाव।
आब नहि सहत मधेशी
आ नहि रहत उपेक्षित मधेश,
मधेशेक धरतीमे जनमल रहैक
सीता आ बुद्ध,
दीना-भद्री आ सलहेश।
हक आ अधिकारक हेतु शहीदक बलिदान
पाओत अबस्से
पहिचानक उदेश...
आह मधेश, ओह मधेश।



ई थिक मुम्बई!

कांदिबेलीमे दरभंगा ताकब
बान्द्रामे मधुबनी
दादरमे जनकपुर तकबै
चौपाटीमे अगहनी
औ बाबू! ई थिक मुम्बई सोरहन्नी!
जे पेटक ब्याजेँ
दूर वनल सभ
श्रमे तकर वबुअन्नी,
औ वावू, ई थिक मुम्वंई सोरहन्नी!
नेशनल पार्कक चुम्मा-चाटी
आ अन्धेरीक अन्हेर
कतेको दिवसपर भेंट भैयारी
एक्कहि छाक निसभेर,
कटैत रहैए सभकेओ कन्नी-
औ आबू, ई थिक मुम्बई सोरहन्नी!
जंगल थिक मनुक्खक एत्त
अपनाकेँ खोजव काज बिकट
संकल्प दृढ़ जँ मोनमे बैसल
कमजोरी ने आएत निकट;
पयबाले' लक्ष्य अपन जँ
बनल रहओ बतहपन्नी-
औ बाबू, ई थिक मुम्बई सोरहन्नी!
दशो लाखकेर बासी एत्त
मैथिली अलख जगौने छथि
दूर मातृभूमि, गाम-घर, मुदा
माटिकेँ हृदय लगौने छथि,
बढ़ैत रहओ एहिना सन-सन्नी
औ बाबू, ई मुम्बई सोरहन्नी!!

✦

हाथमे एकटा सौंस वर्ष अछि

देवालपर टाँगल
पुरना सालक कलेण्डरकेँ उतारैत
हाथ थर-थरा जाइत अछि,
काँपि जाइए सौंसे शरीर
उद्विग्न भए जाइए मोन
जेना हम कोनो अपराध कयने होइ
गत एक वर्ष धरि
प्रत्येक गते - वार सभकेँ नीराडि-नीराड़ि
देखैत बुझैत ओकर हिसाब भिरबैत।

बहुतो काज कयने हयब
जे सुतरि गेल हयत तकर प्रसन्नतो भेल हयत
जे बिगड़ि गेल होयत–
तकर दुखो कम नहि भेल हयत!
ई त' समय छैक जे
कैलेण्डरक प्रत्येक अंकक संग
छड़पान मारैत अछि,
हम सभ जतबे ओकरा पयबाक प्रयास करैत छी
ओ ततबे अगिला खाढीमे जमि जाइछ
इएह चोरा-नुकी मोनकेँ बहटारने रहैछ
कहियो नीक आ कहियो बेजायक अनुभूति
दिअबैत रहैछ,

मुदा, की कहियो सोचलिऐ-ए जे
वितैत समयक संग हम सभ कतेक पाछाँ पड़िरहल छी
अपन चारूकातक अनभुआर वातावरण-
अपन पहिचानक हेतु संघर्षरत् अन्तरमन-
कतेक फुराउ!
से, आइ पुरान सालक कैलेण्डरकेँ उतारैत
हाथ काँपि जाइत अछि-
जाह, कोना बिता देलिऐ' एक वर्षक जीवन!
नेपाल बैंक लिमिटेडक चौकिदारक।
सतासीसय साठिबेर ठोकल समय-संकेत
कतेक हम अकानि सकलिऐ-ए!
'धत, मनो कहाँ पड़ैछ, कोना बिसरि गेलिऐ सभ
की ठीके एतेक सहजसँ बीति गेल अछि ई साल?

इएह सालने छल जाहिमे
अद्भूत बाढ़ि आयल रहै, जलमग्न भऽ गेल रहै-
गाम-गाम घर-दुआरि, खेत-खरिहान।
अहिसालमे-अयलैक भयंकर विनाशकारी दलकी,
नेपाल-भारतक बिगडैत सम्बन्धक प्रसाद।
नून, मटियातेल आ चीनीक हेतु छीछिआइत लोक
एहि बितलाहा मासमे देखल गेल-ए,
तखन कोना एतेक सहज भऽ सकल अछि ई!
तँ की ओ समय-संकेत टीपले ने गेल छल?
नहि, इहो नहि भऽ सकैछ!
छीडिआइत अपन 'हम'केँ समेटबाक व्यस्तता
कान छेकि देने छल हयत,
ई तँ बाजल जरूर हयत!
जे नहि सुनि सकलिऐ तकर साफल
त' हमही भोगब ने
जे से बितलाहा वर्षक विता देबाक

कचोट जतैक सालैत अछि—
दोसर हाथमे टंगबाक हेतु राखल
नवका वर्षक कलेण्डरक अवस्थिति
ततबे संतोष दिअबैत अछि।
चलू एहि बेर कान खोलिकऽ
काज करबाक हिसका धराब' पड़त।
नेपाल बैंक लिमिटेडक पुर्के कान्छा'क
छोटकी हाथसँ ठोकैत समय-संकेतक ध्वनि
अकानबाक रिआज कर' पडत,
मोनकें परतारक हेतु ई कोनो कम नहि
जे हाथमे सौंस एकटा वर्ष अछि
तीनसय पैसठि दिन अछि
आकि सतासी सय साठिबेर सुनबाक हेतु
बैंकक घण्टी अछि।



जिनगी : किछु नवीन परिभाषा

बन्धु ! हम जनै' छी
अहाँ गहिंरो बात खूब बूझैत छिऐक,
तेँ हे जुनि करु लाथ
सत्ते जिनगी छैक हाथ!
घैल सन जिनगी-
होइछ बड जंजालक ढ़ेरी,
झिटुका छोट होइछ कि पैघ
लगिते फूटैत ने होइत देरी!
जिनगी थिक मरखाह गाइ
जे साँढ़के देखिते कंछी काटऽ लगैछ
गरदनिमे ढेंङ्ग बन्हलो रहैछ-
तँ मौका पबिते दंछी मारल करैछ!
जिनगी थिक घोड़ा।
जकरा मुनले मुँहे खयबाक होइछ आदति,
ने तरक-ने भरक,
जकर दुलत्ती मौका भेटने
नहि करैछ-मालिक आ नोकरमे फरक!
जिनगीक हर-जड भऽ चुकल अछि
एकर फार भोथायल लगैछ,
जाहिसँ 'सीता'क तँ कथे कोन
चिक्कन माटियो ने उकटल पार लगैछ।
जिनगी बड तन्नुक मने माछ
एकर सत-
पानिमे रहने (छँपने रहने)
दौड़त-खेलायत, मुँहजोरी करत
उपर भेने (देखार भेने)
अनेरे छटपटा कऽ मरि जायत।
जिनगी थिक हाँस
जकरा सँ पानिक पानि आ

दूधक दूध छुटिअयबाक दावा
कयल जाइत रहल अछि,
मुदा, आह!
मनुक्ख बरोबरि हाँसकेँ
रुचि लेल खाइत रहल अछि।
जिनगी थिक वाभनकेँ दान कयल छत्ता
उपरसँ तरक-भरक
जेँ पानि पड़ौक तँ
बुन्न एक्को टा लोकायत नहि।
जिनगी अछि–
लालटेमक बत्ती-जिनगीक बत्ती
इंधनकेर संकट अछि
जरैत रहत से
विश्वास नै अछि एक्को रत्ती!
जिनगी थिक सूर्यक धधकैत गोला
जकरा लग गेने
स्वयं तँ जरिते अछि।
दोसरोकेँ डाहि देत!
जिनगी थिक फूल
मुदा, से अनेरे
गुलाब बुझि लेबाक
नहि करब भूल!
जिनगी
कमजोर खाम्हपर ठाढ़
एकटा घर
जे बीहाड़ि-पानिक जोड़सँ
खसि ने पड़य-भहर-भहर!
जिनगी थिक तराजू-
पसंगाह।
जतऽ सम्पूर्ण विवेक भऽ जाइछ लोप,
न्यायकेर सन्तुलन थिक
बड़ कठिनाह!



भेटल होइ अपन पहिचान

आयल अछि अखबारमे
एकटा समाचार
कहाँ दन संघर्षरत मधेशीकेँ
दऽ देलकैए अधिकार
ई सरकार!
मोन मानैत नहि अछि-
आ कोना मानने हएत
मोर्चाक आन्दोलनी
ई छलकपटक खेल!
पक्के मुम्बईक अखबारमे आएल
ई समाचार सभ
कतौ भ्रमात्मक तऽ नहि,
बातकेँ गहिंराई बिनु बुझने
ओहिना आबि गेल हो,
अथवा ठीके चारि महिनासँ
चलैत आबि रहल आन्दोलनकेँ
मत्थर करवाले
फेंकने हो कोनो पासा ई सरकार!
मधेशी सपूत सभक बलिदान
कोना एक्के झोंकमे
ई पहाड़ी मानसिकताक शासक

मटियामेट कऽसकैछ।
सीमा पर अटल-डटल
आन्दोलनीक
घेराव-प्रदर्शन महज लौलक विषय नहि
अपन पहिचानक हेतु
बाध्यता छैक ई अभियान!
नहि, ई नहि भऽ सकैछ,
मधेशकेँ छोड़ि हजारों किलोमीटरक दूरी पर
एतय माता जीवदानीक शरणमे
एक्केटा मनोकामना अछि,
जखन हम घुरी त
क्रूरता आ पाखण्डक बीच
दमन होइत मधेशी
अबस्से पौने होअए कोनो निकास
मुम्बईक अखबारक बोली
भेल होइ सच!
निकलल होइ कोनो समाधान
भेल होइ सहमति
भेटल होइ अपन प्रदेश
आ अपन भाषा, अपन पहिचान!!



अहीँक सन्तान भऽ जीवऽ चाहै छी

आब तऽ एक पयर पर ठाढ़ भेल-भेल
अहाँकेँ चिन्हएबाक हमर संकल्प
कमजोर भऽ रहल अछि!
हे माता! की छल हमर गलती
जे एना कऽ काटऽ पड़ल छल पयर,
कमजोर होबऽ लागल अछि हमर आत्म विश्वास
पाछाँ पड़ि रहल अछि-
अपन मायकेँ सेवा करबाक अवसर!
से तेहन अगुताएल सभक द्वन्द्व
किंवा बतहपनीक शिकार होयबाक कारण
आइ धरि हम बूझि नहि सकल छी हे माता!
नदीक ओहि पारसँ अबैत बन्दुकक आवाज
हमहुँ सुनने रही!
कहैक लोक-दू भाइ-भाइ
आपसमे दुश्मन जकाँ लड़ि रहल छैक कहाँ दन!
लड़ओ-मरओ!
मायक कल्याणक खातिर एक दोसराकेँ
नहि देख' सकबाक प्रतिरोधक बशीभूत
तोहर सन्तान तहियो मातल रहौक!
मुदा, हम तऽ एहिमे कतौ ने रही हे माता!
हम तऽ तोरे छवि गामक नेना-भुटकाक आँखिमे
उतारबा लेल दिन-राति सिखबैत रही
युद्ध आ वितण्डा विरुद्ध नयाँ पीढ़ीक निर्माणमे
लागल रही।
एहने सन क्षणमे एकाएक नदीक पारसँ
आयल एकटा बन्दुकक गोली
हमर जाँघकेँ क्षत-विक्षत पाड़ैत
हमरा बेहोश कऽ देने करुण दृश्य तोहुँ तऽ

देखनहि हयबही हे माता!
मानवता आ मातृत्व प्रेमक पाठ सिखौनिहार
एकटा निरिह अक्षरसेवीकेँ
एहि तरहें अपांग बनौनिहार द्वन्द्व आ वितण्डाक
की अर्थ होइछ माता;
छैक कोनो उत्तर एहि यक्ष प्रश्नक
ओहि उन्मत्त, आन्हर द्वन्द्व पिपाशु सभक संग!
जँ रहबे करितैक तँ किए जइतय हजारो सन्तानक जीवन,
हमरे सन अनेकों निर्दोष किए
बैशाखी पर जीवनकेँ टंगवापर विवश होइतए!
मातृभूमिक शांतिक हेतु,
अपन पहिचान, स्वाभिमान आ बाँट-बखराक हेतु
कएल जाइत एहन द्वन्दक पाछाँ
व्यक्तिगत द्वेष, उन्माद आ वितण्डाक अपेक्षा
प्रेम, सद्भाव आ वातचीतक अस्त्रसँ
जँ लड़ल जइतैक तऽ
क्षतिक ई वीभत्स रूपकेँ देखऽ नहि पड़ितौक तोरा!
क्षति तऽ तोरे होइत छौ ने,
से अपन धरतीक प्रति आशक्ति
आ राष्ट्रक प्रति स्वाभिमान जगबयवला
कोनो प्रयास जे नव पीढ़िके जन्म दैत हो
तकरा तहस-नहस करबाक एहन कोनो प्रयास
अन्ततः किछु जान, किछु टांग-हाथ
अथवा किछु परिवार, सखा- सबंधीकेँ
छहोछित्त टा कऽ सकैछ,
नवराष्ट्र, स्वाभिमान आ संरक्षक सभक नव पीढ़ी
निर्माण नहि कऽ सकत!
तएँ आबहु रोकू एहि उन्मादकेँ,
कोनो बम, मोर्टार आ एम्बुलेन्स
मानवताकेँ छीनि नहि सकैत अछि-
तहिना छिना गेल हमर पयर सेहो
घटा नहि सकल हमर दृढ़ताकेँ
हम एखनो अहींक स्वाभिमानी सन्तान भऽ जीबऽ चाहैत छी।



तेसर दाँत

कहल जाइछ
दाँत कहाँदन दू तरहक होइछै!
एक-जनताके देखा
अपन स्वच्छता प्रमाणित करबा लेल,
दोसर-जे किछु जत्त कतौ भेटि जाइक
चिबा कऽ खयबा लेल,
मुदा, नेता सभकेँ
होइछ तीन तरहक दाँत
एक-देखबा लेल
दोसर-खएबा लेल
आ तेसर-जकर अमूल्यमतसँ
विजयी भऽ गद्दी पर पहुँचैत अछि
तकरे सोनित पीबा लेल!
हमरा लगैए-
संविधान सभाक भीतर-बाहर
स्ट्रींग अपरेशन कऽ
एहने चरित्रक नेता सभक
दाँतकेँ देखार करी!
अपन गुप्त योजना पर अमल करैत
सावधानीसँ अनुसंधान कयल तऽ
कतेकोकेँ चिन्हल, कतेको के बूझल
मुदा ई की!
हमर सभ 'इक्सक्सुलिभ' अभियान
छहोछित्त भऽ गेल
जखन नेता सभक ताही तेसर दाँतकेँ
सार्वजनिक अभिनन्दन भेल!!



पहिलौट भैंसी

आइ भोरे भोर
यादवजी अपन पहिलौट महिसक
एकछाहा दूध दऽ गेलनि
आठ रूपैया लिटर!
कविजी प्रसन्न
महँगो सही
शुद्ध दूध खयबाक सपना हयतनि पूर्ण
रोइया पलटतनि, स्वच्छता बढ़तनि।
मुदा, आँगनसँ बहरायलि कविआइन
तुरते दुहल दूधकेँ देखिते
अपनो फेनाय लगलीह
घरमे पैसलीह, एक लोटा पानि आनि
घऽ देलखिन्ह दूधमे!
आहिरे बा, ई की कएलहुँ।
कविजी हाक्रोश कएलनि
कतेक नेहोरा-विनती कऽ
शुद्ध दूध पीबाक कयने छलहुँ जोगार,
सेहो अहाँसँ देखल नहि भेल
बुझलहुँ ने सुझलहुँ, कऽ देलहुँ बेकार।
पत्नी अपन कटोरीसन आँखि
कविजीक निरीह आँखिमे उझिलैत
मुँहपर रौद्र रसक

अद्‌भूत चमत्कार देखबैत
बजलीह, बरु चिकरलीह
देखू, कहि दै' छी!
ई कोनो कविता नै छै'
जखन-तखन, जेना-तेना
लिखि लेलहुँ, छपा लेलहुँ
किछु अप्पन, किछु आनक
किछु शुद्ध, किछु फेंटा
एहिना चला लेलहुँ!
ई दूध छिऐ दूध
एकर संबंध स्वास्थ्यसँ छै
आइ कएक वर्षसँ घरमे
फेंटा दूध खाइत अयलहुँ अछि हम सब
अहाँक मंगाओल ई शुद्ध दूध
पचबो करतै ककरो?
कविजी भऽ गेलाह चुप्प, सकदम्म
मात्र सूनि पड़नि छातीक धकधकी टा
डर छनि-कनेको आगाँ बढ़ला सन्तां
धधकैत चूल्ही पर
चढ़ि जयतनि दूधक बदला कविता!



खण्ड : तीन

(हमर पहिल प्रकाशित कविता : 'आखर' (कलकत्ता)
सितम्बर+अक्टूबर, 1968ई.)

अन्हरिया-इजोरिया

खेला रहल छी....
जीवनक प्राँगणमे,
सुख आ' दुःखक
अन्हरिया-इजोरिया!
मुदा...
सुख क्षणिक थीक
जखन कि....
दुःख थीक संगी लङ्गोटिया,
सोचैछी बैसि कतहु कोनमे
केहन अभागल....
एखुनका जीवनमे
सुखक इजोरिया
आ'
दुःखक अन्हरियामे
भागि रहलहुँ अछि....
दाव पेंच लगाकए,
मुदा....
क्षणिक इजोरियामे
कइए की सकैत छी!
पकड़ि लैत अछि—

अन्हरियाक दूत,
आ' फेर....
''उएह रामा उएह खटोला''
चरितार्थ भएजाइछ....
हमरा लेल,
पुनः अन्हरियासँ....
पड़ाए चाहैत छी,
मुदा घेरिलैत अछि....
इजोरियाक असंख्य किरण—
एहि क्रमे.... आशामय! आभामय!!
प्रकृतिक आँचरमे
खेलि रहल छी....
अन्हरिया-इजोरिया! इजोरिया-अन्हरिया!





रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जन्म शिक्षा : २००८ साल, साओन, बधचौड़ा, जि. धनुषा

शिक्षा : एम.ए. (त्रि.वि.वि.)

प्रकाशित कृति

काव्य : बन्न कोठरी औनाइत धुंआ (कविता संग्रह) : २०२६ साल; नहि, आब नहि (दीर्घ कविता) २०३६ साल, मोमक पधलैत अधर (गीत, गजल), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह) : १९९० ई., भयो अब भयो (अनुवाद) बस अब नही (हिन्दी अनुवाद), अन्हरियाक चान (गजल संग्रह) २०७०, तोरासंगे जएबौ रे कुजवा (कथा संग्रह) १९८४ ई, हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथा संग्रह) २०६५ ।

उपन्यास : घर मुहाँ २०६९ ।

नाटक : रानी चन्द्रावती : २०४५ साल, एकटा आओर वसन्त : २०५२ साल, महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक : २०५४ साल, भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु (नेपाली अनुवाद) २०६४, भैया अएलै अपन सोराज (नाटक) 20६७ । एकटा आओर बसन्त एवं अन्य नाटक, (२०६९) साझा प्रकाशन, सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक (२०७२) ।

शोध : जनकपुरधाम र यस क्षेत्र का सांस्कृतिक सम्पदाहरू : २०५६ साल, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी : २०६४ साल, लोकनाट्य : जट-जटिन : २०६४, Cultural Heritage of Janakpur : २०६२ साल । मैथिली लोकसंस्कृति (आलेख संग्रह) २०६६ । तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म (आलेख संग्रह), प्रकाशक : साझा प्रकाशन, 20६७ ।

विविध : आजको धनुषा : २०३९ साल, जनकपुर लोकचित्र : २०४६ साल । समयको अन्तराल पछयाउदै (आलेख संग्रह) (२०६६ साल) ठेकान पर (विचार संग्रह), समय-सन्दर्भ (निबन्ध संग्रह) २०६८, अहाँ जे कहलहुँ (साक्षात्कार संग्रह) २०७१ । चीन जे हम देखलहुं (यात्रा संस्मरण) (२०७०)

सम्पादन : मैथिली पद्यसङ्ग्रह : (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान) : २०५१ साल, लाबाक धान (कविता संग्रह) २०५१ साल, त्रिशूली (स्व. माथुरद्वारा लिखित खण्ड काव्य) २०४९ साल, नेपालक मैथिली पत्रकारिता : २०४४ साल, मैथिली लोकनृत्य : भावभंगिमा एवं स्वरूप (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान) २०६१, अन्तराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल : 20६५ साल, हम और तुम (हिन्दी कविता संग्रह) : २०६६ साल, मैथिली नाटक-संग्रह (नाटक संग्रह) २०६७, महाकवि विद्यापति आ नेपाल (निबन्ध संग्रह) २०६८, मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन, २०६९, लोकनायक सलहेस (निबन्ध संग्रह) २०६९ । लोकनायक सलहेस (द्वितीय खण्ड) (निबन्ध संग्रह) २०७०, लोकगाथा नायक : दीनाभद्री (२०७०) ने. प्र. प्र., नेपाल ।

सम्मान : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार' द्वारा सम्मानित : २०५२ साल, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गा द्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा 'शेखर सम्मान', ने मैथिली साहित्य परिषद् जनकपुर द्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, मधुरिमा नेपाल द्वारा 'मधुरिमा सम्मान', चेतना समिति, पटना द्वारा यात्री चेतना पुरस्कार, साझा प्रकाशन द्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार (२०६८), विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार (२०६९) आदि दर्जनौं सम्मान, पुरस्कार प्राप्त ।

विशेष : पूर्वसदस्य, प्राज्ञ परिषद, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, कमलादी, पूर्व अध्यक्षः साझा प्रकाशन, ललितपुर ।



जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान
जनकपुरधाम, नेपाल

9789937-0-1693-3

